हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 21 दिसंबर 2025

11 रेत की कलाकृतियों में जीवंत हुई साहिबजादों...

12 मार्केट कमेटी चेयरमैन एवं वाइस चैयरमैन ने चलाया...

सरकारी स्कूलों में शौचालय पर विशेष फोकस : डीईओ व डीईईओ हर माह जिले के 5 फीसदी व बीईओ करेंगे 10 फीसदी स्कूलों का निरीक्षण

शिक्षा निदेशालय के आदेश...स्वच्छता स्तर में हो सुधार, अधिकारियों व स्कूल प्रबंधन की जवाबदेही भी तय करना

हरियाणा के सरकारी स्कूलों में शौचालय व्यवस्था पर सख्ती, शिक्षा विभाग ने अपनाया जीरो टॉलरेंस रवैया

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

राजकीय विद्यालयों में शौचालयों की बदहाल व्यवस्था को लेकर शिक्षा विभाग ने अब तक का सबसे कड़ा कदम उठाया है। निदेशक सैकेण्डरी शिक्षा हरियाणा के जारी विशेष आदेशों के बाद पूरे शिक्षा तंत्र में हड़कंप मच गया है। विभाग ने स्पष्ट कर दिया है कि अब स्कूलों में गंदे या अनुपयोगी शौचालयों को केवल तकनीकी कमी नहीं बल्कि गंभीर प्रशासनिक लापरवाही माना जाएगा। इस आदेश का उद्देश्य न केवल स्वच्छता स्तर में सुधार करना है बल्कि अधिकारियों और स्कूल प्रबंधन की जवाबदेही भी तय करना है। शिक्षा निदेशालय ने अपने आदेशों में साफ शब्दों में कहा है कि विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, सम्मान और मूलभूत सुविधाओं से किसी भी तरह का समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रदेश के लाखों छात्र-छात्राओं के हितों को ध्यान में रखते हुए विभाग ने जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई है जिसके तहत शौचालयों की स्थिति पर लगातार निगरानी रखी जाएगी।

औचक निरीक्षण से कसी जाएगी नकेल

विभाग ने लापरवाही पर लगाम लगाने के लिए निरीक्षण प्रणाली को और अधिक सख्त कर दिया है। आदेशानुसार अब प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी और जिला समन्वयक अधिकारी को हर माह अपने जिले के कम से कम पांच प्रतिशत स्कूलों का औचक निरीक्षण करना अनिवार्य होगा। वहीं खंड शिक्षा अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों के कम से कम 10 प्रतिशत विद्यालयों का निरीक्षण प्रतिमाह करना होगा। इन निरीक्षणों का मुख्य फोकस स्कूलों के शौचालय होंगे। यदि निरीक्षण के दौरान कहीं भी गंदगी, पानी की कमी या शौचालयों की अनुपयोगी स्थिति पाई जाती है तो संबंधित अधिकारी और स्कूल प्रबंधन के खिलाफ तुरंत अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। विभाग का मानना है कि नियमित और औचक निरीक्षण से व्यवस्था में सुधार आएगा और लापरवाह कर्मचारियों पर दबाव बनेगा।

क्या कहते हैं डीईओ

जिला शिक्षा अधिकारी विश्वेश्वर कौशिक ने बताया कि पत्र मिला चुका है। इसे बीईओ के मार्फत सभी स्कूलों में भेजा गया है। स्कूलों को औचक निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने स्कूल प्रबंधकों से कहा है कि स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखें।

प्रधानाचार्यों व मुख्याध्यापकों की सीधी जवाबदेही

स्कूल स्तर पर व्यवस्था सुधारने के लिए प्रधानाचार्यों और मुख्याध्यापकों को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहराया गया है। विभागीय निर्देशों के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में छात्र और छात्राओं के लिए अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था अनिवार्य होगी। साथ ही शौचालय केवल कागजों में मौजूद नहीं होने चाहिए बल्कि पूरी तरह कार्यात्मक और उपयोग योग्य होने चाहिए। शौचालयों में साफ-सफाई और पानी की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना स्कूल प्रमुखों का प्राथमिक कर्तव्य होगा। इसके अलावा प्रत्येक निरीक्षण के बाद प्रधानाचार्य को निरीक्षण रजिस्टर में विधिवत प्रविष्टि करनी होगी ताकि भविष्य में होने वाले ऑडिट और समीक्षा में पारदर्शिता बनी रहे। अब सबकी नजर आगामी महीनों में होने वाले औचक निरीक्षणों और उन पर होने वाली कार्रवाइयों पर टिकी है।

खबर संक्षेप

जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन आज व कल

नारनौल। बागवानी विभाग की ओर से मिश्रित बागवानी विकास मिशन के तहत 21 व 22 दिसंबर को सुबह 10 बजे से दो दिवसीय जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जिला बागवानी अधिकारी ने बताया कि 21 दिसंबर को खंड कनीना के गांव बुचावास में, 22 दिसंबर को खंड के अमरपुर जोरासी में जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य किसानों को बागवानी की आधुनिक तकनीकों और सरकारी योजनाओं से अवगत कराना है।

जिला स्तरीय समस्या निवारण कैम्प आयोजित

नारनौल। सुशासन सप्ताह के अंतर्गत जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जिला स्तरीय समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर कौशिक विशेष रूप से उपस्थित रहे। शिविर के दौरान शिक्षकों की ओर से प्रस्तुत की गई एलटीसी, कोर्ट केस सहित विभिन्न सेवा संबंधी समस्याओं का मौके पर ही निराकरण किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी ने कहा कि इस प्रकार के समस्या निवारण शिविर शिक्षकों को त्वरित समाधान प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि शिविर के माध्यम से शिक्षक अपने कार्यकाल से संबंधित समस्याओं को एक ही दिन में प्रस्तुत कर उनका समाधान प्राप्त कर सकते हैं। इससे अनावश्यक कार्यालयीय प्रक्रियाओं में समय की बचत होती है तथा प्रशासन व शिक्षकों के बीच समन्वय सुदृढ़ होता है। कैंप में प्राचार्य कर्णसिंह यादव, जिला एफएलएन कोर्डिनेटर डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. पंकज गौड़, पवन कुमार, मनोज कुमार, कृष्ण कुमार, सुरेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।

प्रस्तावित सेन्सस 2.0 स्थगित

नारनौल। प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के सामूहिकरण हेतु प्रस्तावित सेन्सस 2.0 का आयोजन 22 व 23 दिसंबर को किया जाना था। जिसे स्थगित करके 29 व 30 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा। इस विशिष्ट गतिविधि के माध्यम से कक्षा दो व तीन के सभी बच्चों का उनकी दक्षताओं के आधार पर सामूहिक करण किया जाएगा। यह अभियान का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे की दक्षताओं को परखना है और इसके आधार पर उनकी स्थिति का आकलन करते हुए वर्गीकरण करना है। कार्यक्रम के जिला समन्वयक डॉ. विक्रम सिंह ने बताया कि सेंसस 2.0 के लिए सभी केआरपी का प्रशिक्षण किया जा चुका है और असेसमेंट के लिए टीजीटी, पीजीटी की ड्यूटी लगाई जा चुकी है। लगभग 800 टीजीटी व पीजीटी को असेसमेंट के लिए प्रशिक्षित किया जा चुका है। हिन्दी के लिए 29 दिसंबर को व गणित के लिए 30 दिसंबर को प्राथमिक विद्यालयों में जाएंगे। इससे पहले कक्षा एक का असेसमेंट कक्षा अध्यापक द्वारा ही 24 से 27 दिसंबर तक किया जाएगा। जिला शिक्षा अधिकारी ने आह्वान करते हुए कहा कि यह है बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है और इसे सफल बनाकर सभी बच्चों को निपुण बनाना ही हमारा लक्ष्य है।

दुकानदार दूसरे गेट पर कब्जा जमाए बैठे, लोगों को उठानी पड़ रही परेशानी

वर्षों से सब्जी मंडी का दूसरा गेट बंद यहां अतिक्रमण से प्रशासन बेखबर

प्रशासन ने सब्जी मंडी में काफी हद तक अतिक्रमण हटा दिया है और रेहड़ियां भी व्यवस्थित ढंग से खड़ी होने लगी हैं, लेकिन प्रशासन की नजर अभी तक सब्जी मंडी के दूसरे गेट पर नहीं पड़ी है

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। दुकानदारों द्वारा बंद किया हुआ सब्जी मंडी गेट। फोटो : हरिभूमि

प्रशासन द्वारा शहर में इन दिनों बड़े स्तर पर अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया हुआ है। शहर के लगभग सभी बाजार खुले-खुले नजर आने लगे हैं। वहीं प्रशासन ने सब्जी मंडी में काफी हद तक अतिक्रमण हटा दिया है और रेहड़ियां भी व्यवस्थित ढंग से खड़ी होने लगी हैं, लेकिन प्रशासन की नजर अभी तक सब्जी मंडी के दूसरे गेट पर नहीं पड़ी है। दुकानदार दूसरे गेट पर कब्जा जमाए हुए बैठे हैं। यहां पर दुकानदारों ने तिरपाल आदि लगाकर गेट बंद किया हुआ है और सब्जी, आलू, टमाटर के बोरे लगाए हुए हैं। इसके अलावा कैरेट आदि लगा रखे हैं।

बता दें कि सब्जी मंडी के दुकानदारों ने काफी लंबे समय से अतिक्रमण किया हुआ था। दुकानदों की रेहडियां, तख्त आदि फड़ की जगह रोड पर लगाए बैठे थे। दोनों ओर से अतिक्रमण होने के कारण वाहन अक्सर फंसे हुए नजर आते थे।

इसके अलावा कई वाहन चालक व दुकानदारों के बीच में मारपीट करने की नौबत आ जाती थी। फिर एसडीएम कनिका गोयल ने कमान संभाली, इसके बाद सब्जी मंडी का दौरा कर रेहड़ी चालकों के चालान काट गए और अपनी हद में रेहड़ी लगाने के निर्देश दिए। एसडीएम के निर्देश रंग लाए और रेहड़ी चालक दीवार से संटाकर रेहड़ी लगाने लगे। वहीं दुकानदार भी काफी हद तक पीछे सरक गए, लेकिन फिलहाल की प्रशासन की निगाहें दूसरे गेट पर नहीं पहुंची हैं। अगर दूसरा गेट खुल जाता हैं तो सब्जी मंडी और खुली–खुली नजर आ सकती हैं, जिससे सब्जी खरीदने आने वाले लोगों को काफी राहत मिल सकती हैं।

आमजन को प्रशासन का सहयोग करना चाहिए: एसडीएम

एसडीएम कनिका गोयल ने कहा कि महेंद्रगढ़ शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए आमजन को प्रशासन का सहयोग करना चाहिए, ताकि महेंद्रगढ़ को जाम मुक्त शहर बनाया जा सके। दुकानदार सड़कों पर अपना कोई भी स्थाई या बेचने वाली सामान न रखें। सभी दुकानदार अपने अधिकृत क्षेत्र में ही अपना सामान रखें, जिससे आमजन को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़ें। रही बात मंडी के दूसरे गेट की वह जल्द ही खुलवा दिया जाएगा, ताकि आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो।

प्रदेश में महेंद्रगढ़ सब्जी मंडी सबसे बड़ी

महेंद्रगढ़ सब्जी मंडी में उत्तर प्रदेश, राजस्थान व हरियाणा की सब्जी की आवक होती हैं। जानकारों का मानना है कि प्रदेश में महेंद्रगढ़ सब्जी मंडी बड़ी मंडियों में शामिल है। सरकार द्वारा सब्जी मंडी का नाम देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी रखा हुआ है। मंडी में आसपास के गांवों के लोग सब्जी खरीदने आते हैं। शहर के बाकी दुकानदारों का कहना है प्रशासन द्वारा जो कार्रवाई की जा रही है, वह अत्यंत सराहनीय है। प्रशासन की इस कार्रवाई से शहर खुला-खुला नजर आने लगा है। ऐसे में प्रशासन को मंडी का दूसरा गेट भी खुलवाना चाहिए, ताकि सब्जी लेने आने वाले लोग आसानी से खरीददारी कर सकें।

नारनौल। रेवाड़ी रोड पर खड़ी अगला पहिया टूटी हुई इक्को। फोटो : हरिभूमि

इक्को एवं वेन्यू गाड़ी में टक्कर इक्को का एक्सल तक टूटा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

रेवाड़ी रोड पर कैलाश नगर स्थित सरस्वती गार्डन के समीप एनएच 11 पर फोर बाइ फोर इक्को एवं वेन्यू गाड़ी के बीच आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि इक्को गाड़ी का अगला एक पहिया एक्सल टूटने से अलग हो गया।

इक्को में सवारियां भरी थी और वह नारनौल से अटेली की तरफ जा रही थी, जबकि वेन्यू गाड़ी अटेली की तरफ से नारनौल आ रही थी। इसी बीच आमने सामने की टक्कर हो गई। एक्सीडेंट के बाद सवारियां इक्को से उतरकर इधर–उधर चली गई, जबकि वेन्यू गाड़ी में एक ही व्यक्ति सवार था, जो गांव सेका का रहने वाला एवं पीएनबी का कर्मचारी बताया जा रहा है, सवार था। हादसे उपरांत एंबुलेंस एवं पुलिस की डॉयल 112 पर सूचना दी गई। पहले पुलिस गाड़ी पहुंची और थोड़ी देर में ही एंबुलेंस भी पहुंच गई, जिस पर वेन्यू गाड़ी सवार को एंबुलेंस के जरिए अस्पताल भेजा गया, ताकि उसका इलाज हो सके। खबर लिखे जाने तक पुलिस पूछताछ में जुटी थी। इस हादसे में सौभाग्य की बात यह रही कि जोरदार टक्कर होने के बावजूद सभी मामूली चोटों के शिकार हुए और बड़े हादसे से बाल–बाल बच गए। अति व्यस्त रोड होने के चलते तुरंत ही वहां भीड़ इक्ट्ठी हो गई।

ट्रामा सेंटर के बाहर साइकिल पर रखे थैले से 49 हजार गायब

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

नागरिक अस्पताल में बने नए ट्रॉमा सेंटर के बाहर दिन–दहाड़े दो महिलाओं ने एक व्यक्ति के साइकिल पर रखे थैले से 49 हजार रुपये चुरा लिए। जिसकी शिकायत पीड़ित ने पुलिस को दी है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर जांच शुरू कर दी है। साथ ही सीसीटीवी फुटेज सामने आने पर उसकी भी मदद ली जा रही है। राजस्थान के नजदीकी गांव निहालपुरा निवासी महीपाल गत 18 दिसंबर को पंजाब नेशनल बैंक नजदीकी शाखा सिविल अस्पताल से 50 हजार रुपये की नकदी निकलवाई थी। बैंक से निकलते समय उसे आभास हुआ कि दो महिलाएं उसका पीछा कर रही हैं। हालांकि उस समय उसने इसे गंभीरता से नहीं लिया। शिकायत के अनुसार दोपहर को उसने ट्रॉमा सेंटर के बाहर केले की रेहड़ी से केले खरीदे। इस दौरान उसके साइकिल के हैंडल पर थैला रखा हुआ था, जिसमें 49,500 रुपये नकद, पासबुक और चेकबुक रखी हुई थी। उसी समय दोनों महिलाएं वहां पहुंची। एक महिला केले की रेहड़ी के पास खड़ी हो गई, जबकि दूसरी महिला ने साइकिल के हैंडल पर रखे थैले पर चुन्नी डाल दी और मौका पाकर थैले से नकदी, पासबुक व चेकबुक निकाल ली और वहां से फरार हो गई। पीड़ित ने बताया कि घटना के बाद उसने ट्रॉमा सेंटर में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी देखी, जिसमें दो महिलाओं की संदिग्ध गतिविधियां स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हैं। पीड़ित ने पुलिस से मांग की है कि दोनों महिलाओं की पहचान कर उसके चोरी हुए 49,500 रुपये, पासबुक और चेकबुक बरामद करवाई जाए और उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

पुलिस ने शिकायत के आधार पर जांच शुरू की

पोक्सो एक्ट में आरोपित बरी

नारनौल। थाना सतनाली में पोक्सो एक्ट के तहत दर्ज मामले में आरोप सिद्ध नहीं होने पर कोर्ट ने एक आरोपित को बरी कर दिया। यह मामला करीब नौ माह पूर्व ही दर्ज हुआ था। आरोपित पर पोक्सो एक्ट के अलावा बीएनएस की अन्य धाराएं भी लगी थी। जिसकी सुनवाई न्यायालय में चल रही थी। आरोपित की ओर से पैरवी कर रहे वकील संदीप कुमार ने बताया कि उन्होंने आरोपित का पक्ष मजबूती के साथ न्यायालय के समक्ष रखा। मामले में सभी साक्ष्यों, गवाहों और तथ्यों पर विस्तार से बहस की गई। बीती 18 दिसंबर को केपी सिंह अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने मामले में फैसला सुनाते हुए आरोपित को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। न्यायालय ने अपने आदेश में अभियोजन पक्ष की ओर से आरोपों को सिद्ध न कर पाने को आधार बनाया। फैसले के बाद आरोपित पक्ष ने राहत की सांस ली। वकील संदीप कुमार ने कहा कि न्यायालय ने निष्पक्षता से सभी तथ्यों पर विचार कर निर्णय दिया है। उन्होंने न्यायपालिका के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सत्य और कानून की जीत हुई है।

श्यामपुरा की टूटी माइनर को नहर विभाग ने करवाया रिपेयर

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

मंडी अटेली। श्यामपुरा माइनर जेसीबी की सहायता से रिपेयर करते हुए।

श्यामपुर माइनर नहर टूटने से क्षेत्र के किसानों की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। नहर टूटने के कारण करीब 15 एकड़ क्षेत्र में खड़ी फसल जलमग्न हो गई, जिससे किसानों को नुकसान की आशंका है। अकलीपुर पुलिया के पास नहर टूटने से समीप बने एक मकान में भी क्षति पहुंची है। वहीं पशुओं का चारा भी पानी में भीग गया। दूसरे दिन नहर को रिपेयर कर दिया गया। अब अंतिम छोर तक पानी को पहुंचाया जाएगा, ताकि किसानों को सिंचाई करने के दौरान कोई परेशानी नहीं हो।

वहीं किसानों का कहना है कि वे बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं। पिछली बार भी इसी स्थान से नहर टूटी थी, लेकिन उस समय कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। जिम्मेदार अधिकारी समय पर मरम्मत नहीं कराते और नहर टूटने के बाद केवल मिट्टी डालकर अस्थाई लीपापोती कर दी जाती है, जिससे समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो पाता। किसानों ने बताया कि टेल तक पानी बहुत कम मात्रा में पहुंचता है, जिसमें दो दर्जनभर किसान कभी-कभी पानी से वंचित भी रह जाते हैं।

किसानों ने मांग की है कि नहर की गुणवत्ता की जांच कराकर नियमित व पुख्ता मरम्मत कराई जाए, ताकि समय पर सिंचाई का पानी मिल सके और उनकी फसलें सुरक्षित रह सकें।

भूमि विकास बैंक के उपभोक्ताओं को ब्याज माफी का तोहफा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

किसानों को कर्ज मुक्त करने के लिए प्रदेश सरकार ने वन टाइम सैटलमेंट (ओटीएस) स्कीम लागू की है। स्कीम के तहत अब मृतक किसान के परिजनों द्वारा भूमि विकास बैंक से लिए गए ऋण का मूलधन जमा करने पर उनको ऋण मुक्त कर दिया जाएगा।

ओटीएस को सभी किसानों तक पहुंचाने के लिए जिला प्राथमिक सहकारी कृषि ग्रामीण विकास बैंक के निदेशक मंडल व बैंक अधिकारियों की एक बैठक का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता चेयरमैन सुनील यादव ने की। ग्रामीण विकास बैंक कार्यालय में आयोजित इस बैठक में चेयरमैन ने कहा कि ओटीएस स्कीम के तहत सहकारी भूमि विकास बैंक से ऋण लेने वाले किसानों द्वारा ऋण को एकमुश्त जमा करवाने पर 50 प्रतिशत ब्याज राशि माफ कर दी जाएगी। ऋण लेने वाले किसानों को ऋण पर लगाई गई पेनल्टी पूरी माफ कर दी जाएगी। मृतक किसानों के परिजनों द्वारा लिए गए कर्ज की मूल राशि जमा करने पर उनको कर्ज मुक्त कर दिया जाएगा। मुख्य कार्यकारी अधिकारी रणवीर सिंह ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य किसानों को कर्ज मुक्त कर उन्हें राहत देना है। इस योजना का अधिक से अधिक किसानों को लाभ उठाने का आह्वान किया। मौके पर राज्य निदेशक विजयपाल सिंह, उपेंद्र व सभी बैंक प्रबंधक मौजूद रहे।

खुशहाली दूरदर्शी विजन से महेंद्रगढ़ जिले में जल प्रबंधन के क्षेत्र में हुए ऐतिहासिक कार्य

जीवनदायिनी मानी जाने वाली कृष्णावती और दोहान नदियों को नहर के पानी से किया पुनर्जीवित

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिले में जल प्रबंधन के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। सिंचाई विभाग के प्रयासों से दशकों से क्षेत्र के किसानों के जीवन में खुशहाली का नया संचार किया है। जिले की जीवनदायिनी मानी जाने वाली कृष्णावती और दोहान नदियों को नहर के पानी से पुनर्जीवित किया गया है।

इस परियोजना के तहत आज 32 चिन्हित स्थानों के माध्यम से लगभग 500 क्यूसेक पानी इन नदियों में साल में 90 दिनों से अधिक समय तक 80 किलोमीटर की लंबाई में लगातार बहता है। इससे प्रतिवर्ष 31,200 एकड़ फुट भूजल का पुनर्भरण हो रहा है। मुख्यमंत्री के जल संचयन के संकल्प को धरातल पर उतारते हुए प्रशासन ने पंचायत की अतिरिक्त भूमि का उपयोग कर 325 तालाबों को रिचार्जिंग केंद्रों में बदला है। इससे सालाना 66,228 एकड़ फुट पानी जमीन के भीतर वापस जा रहा है।

नारनौल। हमीदपुर बांध। फोटो : हरिभूमि

138 पंचायतों में भूजल स्तर में भारी सुधार

उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार ने बताया कि भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए बाढ़ के दौरान यमुना के अतिरिक्त पानी को सहेजने के लिए 25 पक्के जलाशयों का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है, जो 8300 एकड़ फुट पानी के भंडारण के साथ सिंचाई की व्यवस्था को और सुदृढ़ करेगा। इन संयुक्त प्रयासों का ही परिणाम है कि वर्ष 2024-25 के आंकड़ों के अनुसार जिले की 138 ग्राम पंचायतों में भूजल स्तर में भारी सुधार दर्ज किया गया है। इनमें से 11 पंचायतों में तो यह सुधार 40 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक देखा गया है, जबकि 93 पंचायतों में जल स्तर अब पूरी तरह स्थिर हो चुका है। अकबरपुर सिरोही, आकोली और आंतरी जैसे अनेक गांवों में पीजोमीटर स्थापित किए गए हैं, जो न केवल जल स्तर की सटीक निगरानी कर रहे हैं बल्कि जनता को जल संरक्षण के प्रति निरंतर प्रेरित भी कर रहे हैं।

निवेश लिए अगले साल लें स्मार्ट फैसला, तभी कर पाएंगे कमाई

मल्टी-एसेट में मिलेगा बढ़िया रिटर्न

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

सा ल 2025 वैश्विक और घरेलू स्तर पर निवेशकों के लिए उतार-चढ़ाव भरा रहा है। टैरिफ, जियो-पॉलिटिकल टेंशन, जीएसटी सुधार और आईपीओ की बढ़ती गतिविधियों के बीच शेयर बाजार लंबे समय तक सीमित दायरे में घूमता रहा। हालांकि साल के दूसरे हिस्से में बाजार में धीरे-धीरे सुधार के संकेत दिखने लगे। इसी दौरान 2 एसेट क्लास सोना और चांदी ने निवेशकों को सबसे ज्यादा अट्रैक्ट किया। जहां सोने ने इस कैलेंडर ईयर में अबतक 63% रिटर्न दिया, वहीं चांदी ने 100% से ज्यादा की तेजी दिखाई, जिससे निवेशकों की दिलचस्पी एक बार फिर वैकल्पिक एसेट्स की ओर बढ़ी। बीते रिटर्न को देखकर निवेश करना अक्सर गलत फैसलों की वजह बनता है। तेजी के बाद निवेश करने का ट्रेंड, जिसे रिटर्न के पीछे भागना" कहा जाता है, लंबे समय में नुकसान भी पहुंचा सकती है। ऐसे माहौल में विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने के बजाय निवेशकों को लंबी अवधि की सोच, अनुशासन और मल्टी-एसेट डायवर्सिफिकेशन पर ध्यान देना चाहिए। अलग-अलग एसेट क्लास में संतुलित निवेश न सिर्फ रिस्क को कम करता है, बल्कि समय के साथ कंपाउंडिंग के जरिए बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखता है।

- इस साल 2025 में गोल्ड और सिल्वर में रही मजबूत रैली
- बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश न करें
- बेहतर है लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं
- जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सकेगा
- शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय अनुशासन व लंबी अवधि पर करें फोकस

रिटर्न के पीछे भागना गलत स्ट्रैटेजी

लॉन्ग टर्म रिटर्न चार्ट देखें तो पता चलेगा कि सोने में निवेशकों का इंटरेस्ट तब तेजी से बढ़ता है, जब इसके रिटर्न तेजी से बढ़ने लगते हैं, लेकिन जैसे ही कीमतें गिरती हैं, यह इंटरेस्ट भी कम हो जाता है। यह प्रतिक्रिया पर आधारित तरीका साफ बताता है कि निवेश में अनुशासन और निरंतरता कितनी जरूरी है। बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, निवेशकों के लिए बेहतर है कि वे लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं, जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सके। इसे अपनाने का एक असरदार तरीका है आउटसोर्स्ड एसेट एलोकेशन, यानी ऐसे फंड्स में निवेश करना जो अलग-अलग एसेट क्लास में अपने आप निवेश को संतुलित करते हैं।

क्यों जरूरी है डायवर्सिफिकेशन

सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास के पीछे भागना, चाहे तेजी के समय शेयर हों या गिरावट के समय सोना, अक्सर गलत समय पर निवेश करने और बाजार के अधिक उतार-चढ़ाव का जोखिम बढ़ा देता है। डायवर्सिफिकेशन इन जोखिम को कम करता है, क्योंकि इसमें पैसा अलग-अलग एसेट्स में लगाया जाता है जो अलग परिस्थितियों में अलग तरह से व्यवहार करते हैं। लेकिन अब यह ट्रेंड फिर से बदल रहा है। जून 2024 से, बाजार ने एक बार फिर तेज ग्रोथ और अच्छी क्वालिटी वाली कंपनियों को बेहतर रिटर्न देना शुरू कर दिया है। इन कंपनियों ने अप्रैल 2023 से मई 2024 के दौरान हुए अपने खराब प्रदर्शन का एक-चौथाई से ज्यादा हिस्सा वापस हासिल कर लिया है। इसलिए निवेशकों को शेयरों में भी अलग-अलग स्टाइल में निवेश करके पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करना चाहिए।

समझदारी दिखाएं

आज की दुनिया में, जहां बदलाव लगातार हो रहा है, समझदारी से किया गया डायवर्सिफिकेशन एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाने के लिए सिर्फ अच्छा नहीं, बल्कि बहुत जरूरी है। निवेशकों को शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय संतुलन, अनुशासन और लंबी अवधि की रणनीति पर ध्यान देना चाहिए। इसलिए, अलग-अलग एसेट्स में डायवर्सिफाइड मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो को जोखिम और रिटर्न के सही संतुलन में मदद करने दें, ताकि समय के साथ कंपाउंडिंग अपना कमाल दिखा सके।

प्रमुख एसेट क्लास और उनका व्यवहार

आज के आपस में जुड़े हुए और उतार-चढ़ाव भरे ग्लोबल वित्तीय माहौल में, सिर्फ एक ही एसेट क्लास पर भरोसा करना निवेशकों के लिए बेवजह का जोखिम पैदा कर सकता है, चाहे उसने हाल ही में कितना भी अच्छा प्रदर्शन क्यों न किया हो। इस समय मुख्य एसेट क्लास किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं।

सोना और चांदी

ये कीमती धातुएं पारंपरिक रूप से सुरक्षित निवेश मानी जाती हैं। महंगाई के समय या जब सामान्य करेंसी (फिएट करेंसी) कमजार होती है, तब ये अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। चांदी का इस्तेमाल इंडस्ट्री में भी होता है, इसलिए यह इकोनॉमिक साइकिल से ज्यादा प्रभावित होती है। इससे इसमें उतार-चढ़ाव भी ज्यादा होता है, लेकिन मौके भी मिलते हैं।

शेयर (इक्विटी)

शेयरों में बढ़त की अच्छी संभावना होती है, खासकर उन क्षेत्रों में जो नई तकनीक और इनोवेशन से जुड़े होते हैं, लेकिन ये ब्याज दरों, कंपनियों की कमाई के अनुमान और आर्थिक बदलावों के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं। अलग-अलग देशों और इंडस्ट्री में इनका प्रदर्शन काफी अलग हो सकता है।

फिक्स्ड इनकम (बॉन्ड)

बॉन्ड अपेक्षाकृत स्थिरता और फिक्स्ड इनकम देते हैं। हालांकि ब्याज दरें बढ़ने पर बॉन्ड की कीमतों पर दबाव आ सकता है, फिर भी ये जोखिम कम करने और पूंजी को सुरक्षित रखने के लिए बहुत जरूरी होते हैं। खासकर सतर्क निवेशकों या

रिटायरमेंट के करीब लोगों के लिए ये काफी उपयोगी हैं।

रियल एसेट्स और वैकल्पिक निवेश

रियल एस्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर और कमोडिटीज महंगाई से बचाव करने और निवेश में डाइवर्सिफिकेशन लाने में मदद कर सकते हैं। वहीं, प्राइवेट इक्विटी और हेज फंड जैसे वैकल्पिक निवेश रिटर्न बढ़ा सकते हैं, लेकिन इनमें जोखिम अधिक होता है और पैसा जल्दी निकालना आसान नहीं होता।

(डिस्क्लेमर : यह आर्टिकल ब्रोकरेज हाउस की रिपोर्ट के आधार पर जानकारी के उद्देश्य से दिया है। यह फाइनेंशियल एक्सप्रेस के निजी विचार नहीं हैं। किसी कैटेगरी में निवेश की सलाह ब्रोकरेज हाउस के द्वारा दी गई है। बाजार में जोखिम होते हैं, इसलिए निवेश के पहले एक्सपर्ट की सलाह लें।)

विदेश घूमने का है प्लान तो ट्रैवल इंश्योरेंस लेते समय न करें गलतियां

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी विदेश में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो कुछ सावधानियां बरतें और विदेश जाने से पहले ट्रैवल इंश्योरेंस की बारीकियों को अच्छे से समझ लें, ताकि कवरेज, सब-लिमिट या बीमारी छिपाने जैसी गलती से आपका क्लेम अटके नहीं। वरना आपको इससे भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। अक्सर विदेश घूमने की प्लानिंग में फ्लाइट, होटल, घूमने-फिरने की जगहें सब कुछ सोच लिया जाता है, लेकिन ज्यादातर लोग इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस को हल्के में ले लेते हैं, जबकि बाहर कुछ अनहोनी हो जाए तो यही इंश्योरेंस बड़ा सहारा बन सकता है। जानकारों का कहना है कि भारतीय यात्री अक्सर कुछ आम गलतियां कर बैठते हैं, जिनसे बाद में भारी नुकसान हो सकता है। इसलिए कभी भी विदेश घूने के लिए जाएं तो इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस के बारे में अच्छे से जान लें। इससे आप आसानी से बिना किसी चिंता के विदेश घूम सकेंगे। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ नियम जो आपको विदेश जाने के दौरान होने वाली परेशानियां से बचाएंगे और सुरक्षित रखेंगे।

कवरेज की रकम कम रखना सबसे बड़ी भूल

शेंगेन देशों के लिए वीजा लेने के लिए कम से कम 30,000 यूरो का कवर जरूरी होता है, लेकिन ये सिर्फ वीजा की शर्त है, सुरक्षा के लिए नहीं। अमेरिका या यूरोप जैसे देशों में मेडिकल खर्चा बहुत ज्यादा होता है। वहां एक दिन आईसीयू में रहने से ही पूरी कवरेज रकम खत्म हो सकती है और बाकी लाखों रुपये खुद की जेब से देने पड़ सकते हैं। इसलिए सावधानी बरतें और ध्यान रखें।

पहले से मौजूद बीमारियां छिपाना भारी

कई लोग डायबिटीज या हाई ब्लड प्रेशर जैसी पुरानी बीमारियां छिपा देते हैं, ताकि प्रीमियम कम देना पड़े। अगर विदेश में हॉस्पिटल में भर्ती होना पड़े और वो बीमारी छिपाई गई पुरानी बीमारी से जुड़ी हुई निकले, तो क्लेम तुरंत रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए जब भी इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस लें तो अपनी सारी बीमारियों का उल्लेख करें। इससे क्लेम लेने में परेशानी होगी।

सिर्फ मेडिकल कवर पर ध्यान न दें

ट्रैवल इंश्योरेंस में सिर्फ इलाज ही नहीं, फ्लाइट डिले, कैंसिलेशन और सामान खोने जैसी परेशानियों का भी कवर मिलता है। "अगर फ्लाइट छह घंटे से ज्यादा लेट हो जाए तो होटल और खाने का खर्चा क्लेम किया जा सकता है। सामान खोने पर एयरलाइन का लिखित डॉक्यूमेंट जरूर रखें, वरना इंश्योरेंस कंपनी क्लेम नहीं मानेगी।" इसलिए सिर्फ मेडिकल कवर ही नहीं, बाकी चीजों पर ध्यान न दें, ताकि किसी आपात स्थिति में आपको परेशानी का सामना न करना पड़े।

सब-लिमिट को नजरअंदाज करना

कई पॉलिसी में रूम रेंट या सर्जरी जैसे खर्चों पर अलग-अलग कैप यानी सब-लिमिट होती है। "भले ही कुल कवरेज रकम ज्यादा हो, लेकिन सब-लिमिट की वजह से क्लेम में बहुत कटौती हो सकती है।" इसलिए सब लिमिट पर भी ध्यान दें, ताकि बाद में पछताना न पड़े। इससे आप आसानी से क्लेम कर सकेंगे। अपनी ट्रिप के हिसाब से सही इंश्योरेंस चुनें कवरेज रकम और फीचर्स आपकी यात्रा की जगह, मकसद और दिनों के हिसाब से होने चाहिए। जानकारों का कहना है कि आप जिस देश में जा रहे हैं, वहां इलाज का औसत खर्चा एक बार जरूर चेक कर लेना चाहिए। अमेरिका-यूरोप में इलाज का खर्च बहुत महंगा पड़ता है, जबकि साउथ ईस्ट एशिया या मिडिल ईस्ट में थोड़ा कम, लेकिन फिर भी काफी ज्यादा होता है। इसलिए पहले उस देश की स्थिति जरूी देख लें जहां आप घूमने जा रहे हैं।

यात्रा का मकसद

बिजनेस ट्रिप पर जाने वाले लोग फ्लाइट डिले, मिस्ड कनेक्शन और लैपटॉप-डिवाइस कवर को प्राथमिकता दें। घूमने-फिरने वाले लोगों को एडवेंचर स्पोर्ट्स, कार रेंटल या क्रूज कवर की जरूरत पड़ सकती है। "बुजुर्गों को पुरानी बीमारियां पूरी तरह बतानी चाहिए। कैशलेस हॉस्पिटलाइजेशन वाली पॉलिसी लें और कम खर्च वाले देशों में भी ज्यादा कवरेज रखें।" शुरू में आपको थोड़ा ज्यादा पैसा प्रीमियम के तौर पर देना पड़ सकता है, बाद में यह आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है।

एक्सक्लूजन और शर्तें ध्यान से देखें

एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं : ज्यादातर पॉलिसी में सिर्फ लाइसेंस वाले इंस्ट्रक्टर की निगरानी में किए गए मनोरंजन वाले एक्टिविटी का कवर मिलता है। प्रोफेशनल लेवल पर प्राइज मनी वाली एक्टिविटी शामिल नहीं होती। एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं देखकर ही बीमा करवाएं।

डिडक्टिबल और सब-लिमिट

डिडक्टिबल वो फिक्स रकम है जो आपको खुद देनी पड़ती है, उसके बाद इंश्योरेंस शुरू होता है। "लोग अक्सर नहीं जानते कि डिडक्टिबल से कम का क्लेम बिल्कुल नहीं मिलेगा।" विदेश यात्रा का इंश्योरेंस सिर्फ औपचारिकता नहीं है। सही तरीके से समझकर और अपनी जरूरत के मुताबिक लिया गया प्लान भारी-भरकम मेडिकल बिल, ट्रिप में रुकावट और दूसरी परेशानियों से बचा सकता है।

निवेशकों को खूब भाया फ्लेक्सी कैप फंड्स इस साल रहा टॉपर

बिजनेस डेस्क

- नेट सेल्स 12 महीनों में सबसे ज्यादा रही
- म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ हुआ
- फ्लेक्सी कैप की खासियत ये लार्ज, मिड व स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश बदलते रहते हैं

एक साल में म्यूचुअल फंड मार्केट में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे बड़े विजेता बनकर उभरे हैं। यह दिखाता है कि उतार-चढ़ाव वाले बाजार में निवेशक अब ज्यादा लचीलापन चाहते हैं। फ्रैंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 12 महीनों में फ्लेक्सी-कैप फंड्स में सभी इक्विटी कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश आया है। पिछले 12 महीनों में इन फंड्स में करीब 75,700 करोड़ का नेट निवेश दर्ज किया गया। निवेशकों ने इसमें बढ़-चढ़कर निवेश और अपनी पूंजी बढ़ाई। इस फंड में मिल रहे अच्छे रिटर्न के कारण ही यह इस सबसे लोकप्रिय फंड बनकार उभरा और निवेशकों का धन बढ़ाने का काम किया।

इक्विटी की मजबूती से बूस्ट

फ्लेक्सी-कैप फंड्स के अच्छे प्रदर्शन से कुल इक्विटी-बेस्ड म्यूचुअल फंड्स की हिस्सेदारी बढ़ी है। अब इक्विटी स्कीमें कुल म्यूचुअल फंड एयूएम का करीब 60% हिस्सा रखती हैं, जो बताता है कि रिटेल निवेशक हाई रिटर्न के लिए जोखिम लेने को तैयार हैं। एसआईपी के जरिए इक्विटी फंड्स में लगातार पैसा आ रहा है, जिससे फ्लेक्सी-कैप फंड्स को लंबे समय का स्थिर निवेश मिल रहा। ये पोर्टफोलियो का हिस्सा बनते जा रहे हैं।

म्यूचुअल फंड का एसेट्स बैंक डिपॉजिट का एक तिहाई

घरेलू बचत के तरीके में अब साफ बदलाव दिखाई दे रहा है। म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ रुपये हो गया है, जो अब कुल बैंक डिपॉजिट का करीब 33% है। एक दशक पहले यह आंकड़ा सिर्फ करीब 13% था। यह बढ़ोतरी दिखाती है कि निवेशक पारंपरिक फिक्स्ड डिपॉजिट से धीरे-धीरे हटकर लंबे समय में ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं, खासकर फ्लेक्सी-कैप जैसे इक्विटी आधारित फंड्स की तरफ।

निवेशकों की सोच में बदलाव

पिछले 5 सालों में म्यूचुअल फंड की संपत्ति 22% की सालाना दर (सीएजीआर) से बढ़ी है, जो बैंक डिपॉजिट की करीब 11% की बढ़त से डबल है। यह बढ़ता गैप बताता है कि लोगों में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है, मेट्रो शहरों के बाहर भी म्यूचुअल फंड की पहुंच मजबूत हुई है और प्रोफेशनल फंड मैनेजमेंट पर भरोसा बढ़ा है। ग्रोथ की संभावना और लचीलापन रखने वाले फ्लेक्सी-कैप फंड्स इस बदलाव के सबसे बड़े बेनेफिशियरीज में शामिल हैं।

फ्लेक्सी-कैप फंड की पॉपुलैरिटी बढ़ी

फ्लेक्सी-कैप फंड्स की बढ़ती लोकप्रियता व घरेलू बचत में म्यूचुअल फंड की बढ़ती हिस्सेदारी यह साफ दिखाती है कि भारत में निवेश की सोच बदल रही है। निवेशक अब बाजार से जुड़े विकल्पों में ज्यादा पैसा नहीं लगा रहे, बल्कि ऐसे फंड भी चुन रहे हैं जो डायवर्सिफिकेशन और लचीलापन दोनों देते हैं। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बैंक डिपॉजिट पर बढ़त बना रहे हैं, फ्लेक्सी-कैप फंड्स आने वाले समय में लंबी अवधि में संपत्ति बनाने की इस कहानी के केंद्र में बने रह सकते हैं।

क्या है फ्लेक्सी कैप फंड

फ्लेक्सी कैप फंड एक ओपन-एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश करता है। इसमें फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, जिससे वे बाजार की स्थितियों के अनुसार अपने पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।

फ्लेक्सी कैप फंड की विशेषताएं

- **लचीलापन:** फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, वे बाजार के अनुसार पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।
- **विविधता:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से लार्ज, मिड व स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **जोखिम और रिटर्न का संतुलन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको जोखिम और रिटर्न का संतुलन मिलता है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है ।

फ्लेक्सी कैप फंड के लाभ

- **पेशेवर मैनेजमेंट:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको पेशेवर फंड मैनेजर्स की दक्षता और जानकारी का लाभ मिलता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है

ईपीएफ-एनपीएस से एफडी तक

2025 में बुजुर्गों को मिला कितना रिटर्न

जानकारी

बिजनेस डेस्क

इस साल भारत के बुजुर्गों के लिए सेवानिवृत्ति पर निवेश से मिले-जुले नतीजे सामने आए हैं। ज्यादातर फिक्स्ड इनकम वाले विकल्पों में रिटर्न स्थिर रहे, जबकि शेयर बाजार से जुड़े निवेश में काफी उतार-चढ़ाव दिखा। यह सब निवेश की मात्रा और सही समय पर निर्भर करता रहा। सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले सुरक्षित विकल्पों में रिटर्न अच्छे और स्थिर रहे। पेंशनबाजार के हेड विश्वजीत गोयल के मुताबिक, ईपीएफ ने 2024-25 के लिए 8.25 फीसदी ब्याज दिया। वहीं सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम (एससीएसएस) और सुकन्या समृद्धि योजना जैसी सरकारी छोटी बचत योजनाओं में 8.2 फीसदी का रिटर्न मिला। पोस्ट ऑफिस की जमा योजनाएं 6.9 से 7.5 फीसदी तक ब्याज दे रही थीं, जबकि बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट में बुजुर्गों को 7 से 7.5 फीसदी के बीच मिला। कुल मिलाकर सुरक्षित विकल्पों में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया।

बाजार से जुड़े निवेश में बड़ा अंतर

मार्केट लिंक्ड विकल्पों की बात अलग थी। विश्वजीत गोयल बताते हैं कि नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) के इक्विटी स्कीमों ने एक साल में मिड-20 से लो-30 फीसदी तक रिटर्न दिया। कॉर्पोरेट बॉन्ड स्कीमों में करीब 9 फीसदी और सरकारी बॉन्ड स्कीमों में 4 से 6 फीसदी तक मिला।

- रिटायरमेंट निवेश का सचः 2025 में बुजुर्गों के रिटायरमेंट निवेश में फिक्स्ड इनकम स्थिर रहे
- वहीं, इक्विटी और एनपीएस में रिटर्न समय और निवेश के हिसाब से बदलते रहे

एक आम रिटायरमेंट के करीब व्यक्ति जिसने एनपीएस में बैलेंस्ड तरीके से पैसा लगाया, उसे कुल 8 से 12 फीसदी रिटर्न हाथ लगा, लेकिन शेयर बाजार इंडेक्स ने बहुत कम दिया। जानकारों के अनुसार, निफ्टी और सेंसेक्स टीआरआई ने वित्त वर्ष 2025 में महज करीब 6 फीसदी रिटर्न दिया।

निवेशकों की गलतियां

आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि कई बुजुर्गों ने गलतियां कीं। ज्यादातर लोग बैंक डिपॉजिट में ही ज्यादा पैसा रखे रहे, टैक्स बचत वाले विकल्पों का फायदा नहीं उठाया या गलत एन्युटी प्लान चुन लिया, जिससे पेंशन कम हो गई या जीवनसाथी को कोई सुरक्षा नहीं मिली। सबसे बड़ी समस्या यह रही कि मेडिकल महंगाई 12-15 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है, जबकि ज्यादातर बुजुर्गों को सिर्फ 7-8 फीसदी रिटर्न मिल रहा है। ऑनलाइन ठगी का खतरा बताया। उदाहरण के तौर पर पुणे के एक रिटायर्ड बैंक मैनेजर ने गारंटीड रिटर्न का लालच देकर चलाए जा रहे ऑनलाइन स्कैम में पूरा 2.2 करोड़ रुपये गंवा दिए।

ये जरूरी बदलाव आपको 2026 के लिए क्या करनी है तैयारी

- आर्थिक विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अब धीरे-धीरे ऐसा पोर्टफोलियो बनाएं। इसमें नियमित आय भी आए और थोड़ी ग्रोथ भी रहे। मिड और स्मॉल कैप में ज्यादा निवेश कम करें, डेट हिस्से को मजबूत बनाएं और 3 से 5 साल की जरूरत के लिए लिक्विडिटी अलग रखें।
- एससीएसएस, ईपीएफ, शॉर्ट से मीडियम टर्म डेट फंड्स, रीट्स/इनविट्स, लैडर्ड फिक्स्ड डिपॉजिट और थोड़ा सा इक्विटी हिस्सा मिलाकर चलें। साथ ही 6 से 12 महीने का आपातकालीन फंड जरूर रखें।

अनुमानः ब्याज दरें नीचें आएंगी

- विशेषज्ञों की लोगों को सलाह कि वे लंबे समय के ब्याज दरें नीचे आएंगी, इसलिए अभी जो अच्छे स्थिर रिटर्न मिल रहे हैं, उन्हें लॉक कर लेना चाहिए। अनुमान है कि 2026 में बैंक एफडी पर 5.5 से 7.5 फीसदी और जी-सेक पर 6 से 6.5 फीसदी तक मिल सकता है। अगर ब्याज दरें गिरेंगी तो एन्युटी की पेआउट भी कम हो सकती है।
- 2024-25 में कई बड़े नियम बदले। यूनिफाइड पेंशन स्कीम शुरू हुई, एनपीएस वात्सल्य लॉन्च हुआ, एनपीएस/यूपीएस/एपेवाई के चार्जेस बदले गए और इंश्योरेंस टैक्स व जीएसटी में भी बदलाव आए। 2026 की प्लानिंग करते समय इन सब पर नजर रखनी जरूरी है।

सावधानी नहीं बरती तो बिगड़ जाएगा फाइनेंस का पूरा गणित

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही तय करते हैं बुढ़ापे की जिंदगी

लापरवाही बरती तो बुढ़ापे में इसका खामियाजा भुगतना होगा

बिजनेस डेस्क

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही बुढ़ापे की जिंदगी तय करते हैं। अगर आपने इस उम्र में गलत डिसीजन लिए या लापरवाही बरती तो बुढ़ापे पर आपको इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे 5 ऐसी गलतियों के बारे में जो आपके बुढ़ापे पर फाइनेंस का पूरा गणित बिगाड़ सकती हैं और आपको भारी आर्थिक परेशानियों का समना करना पड़ सकता है। जवानी में करियर, मस्ती और लाइफस्टाइल पर पूरा फोकस रहता है। इसी भागदौड़ में कई ऐसे फैसले टलते रहते हैं, जो बुढ़ापे को सिक्योर बनाने के लिए बेहद जरूरी होते हैं। उस वक्त लगता है कि अभी बहुत समय है, बाद में देख लेंगे. लेकिन जब उम्र बढ़ती है और जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, तब उन गलतियों को सुधारने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है।

निवेश में देरी

सबसे बड़ी और सबसे आम गलती है समय रहते निवेश शुरू न करना। कई लोग निवेश को खर्च समझ लेते हैं और सोचते हैं कि जब सैलरी बढ़ेगी तब निवेश करेंगे। कुछ लोग 20 साल और 30 साल की उम्र मौज-मस्ती में निकाल देते हैं, जबकि हकीकत यह है कि निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा है। छोटी रकम से भी निवेश शुरू किया जा सकता है, जितनी जल्दी निवेश शुरू करेंगे, उतना ज्यादा समय कंपाउंडिंग को मिलेगा और उतना बड़ा फंड तैयार होगा। देर करने पर बुढ़ापे में फंड की कमी साफ महसूस होती है। इसलिए हमेशा निवेश जल्द शुरू कर देना चाहिए, ताकि बाद में पछताना ना पड़े और समय रहते आपके पास अच्छा खासा फंड एकत्र हो सके।

निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा

घर नहीं सोचा तो बुढ़ापे में परेशानी

आज भी बहुत से लोग किराए के घर में रहते हुए सोचते रहते हैं कि कभी तो अपना घर लेंगे। लेकिन सही समय पर प्लानिंग न करने की वजह से ये सपना अधूरा रह जाता है। जवानी में होम लोन लेना आसान होता है, ईएमआई चुकाने के लिए लंबा समय मिलता है और इनकम बढ़ने की संभावना भी रहती है। 40 साल की उम्र के बाद ये फैसला मुश्किल हो जाता है। जो लोग समय रहते घर की प्लानिंग नहीं करते, वो बुढ़ापे में सबसे ज्यादा पछताते हैं। इसलिए आप अपना बुढ़ापा शान से गुजारना चाहते हैं तो 40 साल की उम्र होने से पहले ही अपने लिए एक मकान जरूर बना लें। इससे आपको बुढ़ापे में परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी।

लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल

जरूरत और शौक के फर्क को न समझना भी एक बड़ी गलती है। कई युवा लग्जरी लाइफ जीने के लिए क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर जरूरत से ज्यादा निर्भर हो जाते हैं। लंबे समय तक कर्ज चुकाने से सेविंग नहीं बन पाती। नतीजा यह होता है कि बुढ़ापे तक भी ईएमआई पीछा नहीं छोड़ती। लोन उतना ही लें, जितना आपकी इनकम और सेविंग्स आराम से संभाल सकें। लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल एक बड़ा खतरा है, जिससे हमें बचना होगा। हमें अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी, बजट बनाना, कर्ज लेने से पहले सोचना और कर्ज को जल्दी चुकाने की कोशिश करनी होगी। तभी हम कर्ज के जाल से बच सकते हैं।

इंश्योरेंस से दूरी

कई लोग सोचते हैं कि इंश्योरेंस की अभी क्या जरूरत है, लेकिन यही सोच आगे चलकर भारी पड़ती है। कम उम्र में टर्म और हेल्थ इंश्योरेंस लेने पर प्रीमियम कम होता है और कवर ज्यादा मिलता है। यह मुश्किल समय में आपके और आपके परिवार के लिए मजबूत सुरक्षा कवच बनता है। हेल्थ खर्च और अनहोनी से बचाव के लिए इंश्योरेंस को नजरअंदाज करना बड़ी भूल है। समय रहते इंश्योरेंस कवर ले लेना चाहिए, ताकि आपात स्थिति में मुंह न ताकना पड़े।

रिटायरमेंट प्लानिंग टालना

बच्चे संभाल लेंगे या अभी तो बहुत टाइम है जैसी सोच सबसे खतरनाक होती है। जल्दी रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना ही मजबूत फंड तैयार होगा।

खबर संक्षेप

नारनौल। सोसायटी सदस्यों को सम्मानित करते अतरलाल एडवोकेट।

बाबा लाल गिरी सोसायटी कनीना को किया सम्मानित

नारनौल। श्री श्री 1008 बाबा लाल गिरी सोसायटी कनीना को खेल, शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रजा भलाई संगठन की ओर से राष्ट्र गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया। धनौंदा गांव में आयोजित सम्मान समारोह में संगठन सुप्रीमो अतरलाल एडवोकेट ने बाबा लाल गिरी सोसायटी के प्रधान पूर्व पार्षद मोहन सिंह, सदस्य कर्णसिंह यादव, पार्षद नितिन, जगमाल सिंह बोहरा, पंकज, सुनिल कुमार को साफा पहनाकर तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया। अतरलाल ने कहा कि सोसायटी की ओर से हर वर्ष खेल आयोजन व रक्तदान शिविर जैसे जो परोपकार के कार्य किए जा रहे हैं। इससे क्षेत्र की जनता हमेशा सोसायटी की ऋणी रहेगी।

महेंद्रगढ़। वाटिका का भ्रमण करते विद्यार्थी। फोटो हरिभूमि

बच्चों ने किया श्याम वाटिका का भ्रमण

महेंद्रगढ़। मौदाश्रम मंदिर के सामने मोहल्ला जवाहर नगर में स्थित श्री ओमसाईंराम एकेडमिक व हाइट्स पब्लिक स्कूल के 52 बच्चों ने विद्यालय की उपप्राचार्या मोनिका दीवान के नेतृत्व में सतनाली रोड पर स्थित श्री श्याम वाटिका का भ्रमण किया और पेड़ पौधों की जानकारी ली। इस दौरान बच्चों ने सीखा कि मौसम के अनुसार पेड़-पौधों की देखभाल कैसे करनी चाहिए तथा पेड़ पौधे हमारे पर्यावरण के लिए कितने आवश्यक हैं। चेयरपर्सन निशा सैनी ने बच्चों को बताया कि पेड़ पौधे पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। वे वर्षा लाने में सहायक हैं।

कनीना। विद्यार्थियों को सम्मानित करते चेयरमैन जगदेव यादव व अन्य।

एसडी ककराला में विद्यार्थियों को किया सम्मानित

कनीना। गांव ककराला स्थित एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के चेयरमैन जगदेव यादव ने राज्य स्तरीय युवा उत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया। प्राचार्य ओमप्रकाश यादव ने बताया कि राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में विद्यार्थी दीपांशु व कीर्ति को विद्यालय प्रबंधन की तरफ से 11-11 हजार व जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा भावना तथा भूमि को 5100-5100, तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले छात्र लक्ष्य व अभिनव को 2100-2100 का पुरस्कार दिया।

ठंडे बुर्ज की कैद से दीवारों में चुने जाने तक की अमर गाथा देख नम हुई आंखें

रेत की कलाकृतियों में जीवंत हुई साहिबजादों की वीरता

राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल में सैंड आर्ट शो का किया आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

मुगल शासकों के जुल्म के आगे न झुकने वाला जज्बा, धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने का साहस और दीवारों में जिंदा चुने जाने के बाद भी चेहरे पर वही निडर मुस्कान, जब गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों की शहादत की यह वीरगाथा रेत के कणों के माध्यम से जीवंत हुई, तो वहां मौजूद हर शख्स की आंखें नम और सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

अवसर था राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित सैंड आर्ट शो का, जहां कला के अनूठे संगम ने इतिहास की महानतम शहादत को जीवंत कर दिया। इस जिला स्तरीय कार्यक्रम के अंत में साहिबजादों के जीवन पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी करवाया गया। उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार के मार्गदर्शन में सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग, कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग और शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी विश्वेश्वर कौशिक ने किया। विशिष्ट अतिथि हरियाणा सिख गुरुद्वारा कमेटी के कार्यकारी सदस्य सरदार तेजेंद्र पाल सिंह मौजूद थे। इस 40 मिनट के शो में कलाकारों ने रेत की कलाकृतियों के जरिए सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी के पुत्र साहिबजादा बाबा अजीत सिंह, साहिबजादा बाबा जुझार सिंह, साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह और साहिबजादा बाबा फतेह सिंह के बलिदान के हर लम्हे को भावुक और प्रेरक अंदाज में प्रस्तुत किया। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी पवन भारद्वाज, प्राचार्या प्रोमिला यादव, समाजसेवी बलदेव सिंह चहल, सुरजीत सिंह अरोड़ा, अमरजीत सिंह, हरजीत सिंह, हरविंद्र सिंह के अलावा समस्त स्टाफ व स्कूली बच्चे मौजूद रहे।

परिवार के बिछड़ने के दृश्यों को बारीकी से दिखाया

शो के दौरान कलाकारों ने खालसा पंथ की स्थापना से लेकर 1704 में मुगल सेना के आक्रमण, आनंदपुर साहिब का किला छोड़ना और सरसा नदी के तट पर परिवार के बिछड़ने के दृश्यों को बड़ी ही बारीकी से दिखाया। कार्यक्रम में दिखाया गया कि कैसे गंगू के लालच के कारण माता गुजरी व मासूम साहिबजादों को वजीर खां ने गिरफ्तार किया और उन्हें हाड़कंपा देने वाली ठंड में ठंडे बुर्ज में कैद रखा गया। विद्यार्थियों ने बड़ी उत्सुकता के साथ देखा कि कैसे वजीर खां की भरी सभा में इस्लाम स्वीकार करने के दबाव के बावजूद साहिबजादों ने बिना डरे जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल का जयकारा लगाया। अंत में 27 दिसंबर 1704 को जब साहिबजादा बाबा जोरावर सिंह जी व साहिबजादा बाबा फतेह सिंह जी को दीवारों में जिंदा चिनवाया जा रहा था, तब भी वे निर्भीक होकर जपुजी साहिब का पाठ करते रहे।

महेंद्रगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

12वीं के विद्यार्थियों का क्लैट के साथ अलैट दिल्ली में भी चयन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल के कक्षा 12वीं के तीन होनहार विद्यार्थियों ने देश की प्रतिष्ठित अलैट (कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट) परीक्षा में सफलता प्राप्त कर विद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस परीक्षा में सफल होने वाले विद्यार्थियों में आयुष यादव पुत्र करण सिंह, स्नेहा पुत्री संदीप एवं रिया सैनी पुत्री सुनील सैनी शामिल हैं। इस उपलब्धि को और भी विशेष बनाते हुए विद्यालय के छात्र आयुष यादव ने (ऑल इंडिया लॉ एंट्रेंस टेस्ट) दिल्ली परीक्षा भी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। क्लैट के साथ अलैट जैसी कठिन परीक्षा में चयन होना आयुष यादव की कड़ी मेहनत, अनुशासन एवं निरंतर अभ्यास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। चेयरमैन बीएल यादव, सीईओ डॉ. निशा यादव, डायरेक्टर राहुल यादव एवं प्रधानाचार्य वीरेंद्र सिंह ने संयुक्त रूप से सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई दी। चेयरमैन बीएल यादव ने कहा कि विद्यार्थियों की यह सफलता शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन, विद्यार्थियों की मेहनत तथा अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। डायरेक्टर राहुल यादव एवं प्रधानाचार्य वीरेंद्र सिंह ने भी विद्यार्थियों की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय ने सभी सफल विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं।

- छात्रों ने अपनी प्रतिभा से आयोजकों का दिल जीत लिया

यदुवंशी स्कूल में सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता में हिस्सा लेते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

यदुवंशी स्कूल में शनिवार की गतिविधियों के अंतर्गत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास, टीमवर्क और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना को विकसित करना था। प्रतियोगिता को रोचक बनाने के लिए इसे विभिन्न राउंडों में विभाजित किया गया, जिनमें रैपिड फायर राउंड, ऑडियो-विजुअल राउंड, करंट अफेयर्स राउंड तथा लॉजिकल थिंकिंग राउंड शामिल थे। सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने अत्यंत उत्साह और सकारात्मक भावना के साथ भाग लिया। विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उनके ज्ञान स्तर ने शिक्षकों को अत्यंत प्रभावित किया। कार्यक्रम के अंत में विजेता टीमों को सम्मानित किया गया तथा सभी प्रतिभागियों की सराहना की गई। सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में टीम डी, जिसमें तेजस्वी, संदीप, अनुज, बिनेश प्रथम रहे। टीम ए में आंजनेय, आरव, रितेष, आयुश व टीम बी में नकुल, वर्निका, काव्या, आर्यन द्वितीय स्थान पर रहे व टीम सी में लक्षित, यजत, अंशु यादव, दिपांशु तृतीय स्थान पर रहे। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि आज की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता को देखकर मुझे अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है।

- पुण्यतिथि पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने सर्वधर्म सभा व हवन के आयोजन में लिया भाग

जेजेपी कार्यकर्ताओं ने मनाई स्व. चौधरी ओमप्रकाश चौटाला की पुण्यतिथि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल पूर्व मुख्यमंत्री स्व. चौधरी ओमप्रकाश चौटाला को श्रद्धांजलि अर्पित करते कार्यकर्ता।

सिंघाना मार्ग पर स्थित जननायक जनता पार्टी कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं की ओर से सर्वधर्म सभा का आयोजन कर पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय चौधरी ओमप्रकाश चौटाला की प्रथम पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी कार्यालय में हवन का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला प्रधान राजकुमार खातोद ने कहा कि वर्ष 1999 से 2005 तक मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने हरियाणा में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं लागू की। इनमें सरकार आपके द्वार, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन में बढ़ोतरी, किसानों के लिए सब्सिडी व ऋण योजनाएं, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार तथा युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना प्रमुख रहे। ग्रामीण विकास व सामाजिक सुरक्षा उनकी नीतियों का मुख्य आधार था। उन्होंने कहा कि स्व. चौटाला की सोच हरि का हाथ जनता के साथ की विचारधारा से प्रेरित थी, जिसका उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों तक सीधे लाभ पहुंचाना था। किसानों, मजदूरों और बुजुर्गों के लिए शुरू की गई योजनाओं के कारण उनकी लोकप्रियता प्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर में बढ़ी। जिला प्रधान ने पार्टी के स्थापना दिवस पर आयोजित सफल रैली के लिए सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में मास्टर हरचंद तोबड़ा, सिकंदर गहली, अशोक सैनी, सुरेंद्र पटीकारा, बेदू राता, प्रमोद ताखर, दिनेश तंवर, विजयपाल अधिवक्ता, नगर पार्षद संदीप भाखर, अजय चौधरी अधिवक्ता, विष्णु डाबड़, सचिन पार्षद, अनमोल गुप्ता, महेंद्र, शारदा खन्ना, केशव वर्मा, वीरेंद्र घटाशेर, बिमला प्रधान, शीला प्रधान, शेखर राता, बनवारी फौजी कालबा, सरदार नोनीहाल सिंह, सफी मोहम्मद, ब्रह्मनंद, मिटू सिंह, प्रकाश, बलवान ग्रेवाल, जयवीर फौजी, योगी अदलपुर, सुनील जेवली, अभिषेक कुरावटा, बजरंग गुर्जर, कुणाल शुक्ला मौजूद थे। इस दौरान रमेश बास, जिलेसिंह पड़ताल, पवन कुमार, प्रकाश, विक्रम सहित कई साथियों ने जननायक जनता पार्टी में आस्था व्यक्त की।

आरपीएस ने स्टेट रेडक्रॉस रनरअप का खिताब जीता

- आरपीएस ने ग्रुप डांस में पूरे राज्य में प्रथम स्थान व भाषण में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

आरपीएस स्कूल की छात्राओं ने राज्य स्तरीय जूनियर रेडक्रॉस प्रशिक्षण शिविर में सफलता हासिल की है। इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी की हरियाणा राज्य शाखा चंडीगढ़ द्वारा आयोजित इस पांच दिवसीय शिविर में स्कूल की टीम को 'स्टेट रनर-अप चैंपियनशिप' के खिताब से नवाजा गया है। विद्यालय के विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजी. मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव व प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि इस तरह के शिविर छात्राओं के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं। रेडक्रॉस के इन कैंप के माध्यम से विद्यार्थियों में सेवा भावना, प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान और नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। सीईओ इंजी. मनीष राव ने कहा कि शिक्षा का असली उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने कहा कि जूनियर रेडक्रॉस कैंप जैसी गतिविधियां विद्यार्थियों में अनुशासन, सेवा भावना और नेतृत्व क्षमता विकसित करती हैं।

महेंद्रगढ़। विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

हैप्पी स्कूल में चार दिवसीय स्पोर्ट्स मीट पर सम्मान समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित चार दिवसीय वार्षिक स्पोर्ट्स मीट का शनिवार को समापन किया गया। इस दौरान विद्यालय का वातावरण उत्साह, गर्व और खेल भावना से ओत-प्रोत नजर आया। समापन समारोह में सभी मुख्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से विभिन्न खेल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेता विद्यार्थियों को मेडल पहनाकर एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। मुख्यातिथि विद्यालय संचालक सुभाष चंद्र अग्रवाल तथा उपसंचालिका कौशल्या अग्रवाल ने कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास का माध्यम हैं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता के निर्माण में भी अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को खेलों को सदैव खेल भावना के साथ खेलने की प्रेरणा दी। प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल, मैनेजर चंचल अग्रवाल एवं प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल ने भी विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी।

कॉमर्स ओलंपियाड में हैप्पी स्कूल के छात्र छाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

- विजेता छात्रों को पुरस्कार से किया सम्मानित

जतिन अग्रवाल।

हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने एसओफ इंटरनेशनल कॉमर्स ओलंपियाड में शानदार और गौरवपूर्ण प्रदर्शन कर विद्यालय, अभिभावकों एवं पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में कक्षा 11वीं और 12वीं के कुल 40 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से अधिकांश ने अत्यंत उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इस उपलब्धि का सबसे बड़ा आकर्षण कक्षा 11वीं के छात्र जतिन अग्रवाल पुत्र सुनील कुमार रहे, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय रैंक प्राप्त करते हुए 99.97 परसेंटाइल स्कोर किया। उनकी इस असाधारण सफलता पर उन्हें अंतरराष्ट्रीय सिल्वर मेडल, सर्टिफिकेट ऑफ आउटस्टैंडिंग परफॉर्मेंस, गोल्ड मेडल ऑफ डिस्टिंक्शन, सर्टिफिकेट ऑफ डिस्टिंक्शन, स्टूडेंट प्रोग्रेस रिपोर्ट के साथ-साथ 12,500 की नगद राशि प्रदान की गई। कक्षा 11वीं के 24 विद्यार्थियों ने 99 से अधिक परसेंटाइल प्राप्त कर विद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता को और मजबूत किया। इनमें सुहाना, दिशा अग्रवाल और पायल का प्रदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। वहीं कक्षा 12वीं के 12 विद्यार्थियों द्वारा 99 परसेंटाइल से अधिक अंक प्राप्त किए जाने से पूरे विद्यालय में हर्ष और उत्साह का वातावरण बना हुआ है। इस वर्ग में राधिका अग्रवाल, नंदिनी राठी, कौशिका, प्रियांशी बंसल, ज्योति, पलक मेहता, विभा शर्मा, भव्या बंसल और दीपिका जैसे विद्यार्थियों ने अग्रणी भूमिका निभाई। कुल मिलाकर 36 विद्यार्थियों ने 99 प्रतिशत से अधिक परसेंटाइल अर्जित किए। कॉमर्स अध्यापक पवन कुमार एवं अध्यापिका संतोष यादव का कुशल मार्गदर्शन, सतत परिश्रम और प्रेरणादायी शिक्षण प्रमुख रहा।

नारनौल। पीटीएम में भाग लेते अध्यापक अभिभावक।

हरियाणा स्कूल में पीटीएम आयोजित, अभिभावकों ने रखे सुझाव

नारनौल। मोहल्ला चौधरीयान स्थित हरियाणा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल शनिवार को अध्यापक-अभिभावक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। अभिभावकों ने सभी विषयों से संबंधित शिक्षकों से मिलकर अपने बच्चों की प्रगति रिपोर्ट प्राप्त की। इस अवसर पर विद्यालय चेयरमैन हितेन्द्र शर्मा व निदेशिका संगीता षर्मा ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन की बच्चों की पढ़ाई में लाभदायक होते है। अध्यापक-अभिभावक संगोष्ठी सही मायने में तभी सार्थक होता है, जब सर्वप्रथम अभिभावक बच्चों के लिए जागरूक है और अध्यापक बड़े ही प्रेम से दिशा निर्देश दे। विद्यालय प्राचार्य अवनीष सैनी ने सभी अभिभावकों को विद्यालय पधारने पर धन्यवाद किया। अभिभावकों ने विद्यालय के सभी शिक्षकों की कार्यशैली की प्रशंसा की और विद्यालय के अनुशासन, सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता, शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय परिणाम और सर्वांगीण विकास से जुड़ी सभी गतिविधियों की सराहना की। अभिभावकों ने विद्यालय में शक्षण कार्यशैली के लिए अपने सुझाव भी दिए, उन सुझावों को विद्यालय प्रबंधन की ओर से स्वीकार कर लिया गया। इस मौके पर रामनिवास डीपीई, संजय कुमार, नरेश कुमार, अशोक यादव, मुकेश शर्मा, शुभराम यादव, दीपक कुमार, जोगेंद्र कुमार, लोकेश कुमार, दीपक, लक्ष्मी चौहान, अल्पना शर्मा, ज्योति शर्मा, वन्दना सैनी, सुमन सैनी आदि मौजूद थे।

खतरे का सफर रात्रि के समय इस सर्विस रोड पर कोई लाइट न होने से आ रही समस्या

बाइक सवारों एवं छोटे वाहनों को दिक्कत का करना पड़ रहा है अधिक सामना

खोड़ सर्विस रोड पर स्पीड ब्रेकर और संकेतक बोर्ड नहीं होने से बढ़ा खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

मंडी अटेली। अंडरपास से गुजरता खोड़ सर्विस रोड। फोटो: हरिभूमि

सड़क सुरक्षा को लेकर हर साल प्रयास किए जाते हैं, लेकिन जमीनी हकीकत इससे परे है। नारनौल–रेवाड़ी रोड नेशनल हाईवे 11 पर खोड़ के सर्विस रोड के बीच से तिगरा से अटेली जाने वाले सड़क मार्ग गुजर रहा है। खोड के सर्विस रोड पर ब्रेकर एवं सांकेतिक बोर्ड नहीं होने के चलते वह मार्ग हादसों को निमंत्रण दे रहा है। खोड सर्विस रोड पर एक से दो ब्रेकर तो बनाए हुए हैं, परंतु उन ब्रेकरों का कोई फायदा नजर नहीं आ रहा है। सिहमा, सागरपुर, तिगरा के वाहन चालक नारनौल–रेवाड़ी रोड नेशनल हाईवे खोड बाईपास से होते हुए रेवाड़ी एवं दिल्ली जाते हैं।

समस्या के समाधान की मांग

रेवाड़ी नारनौल रोड नेशनल हाईवे से वापस अटेली से तिगरा रोड पर खोड़ में यह सर्विस रोड से होकर गुजरते हैं। रात्रि के समय इस सर्विस रोड पर न तो कोई लाइट है, न ही कोई संकेतक बोर्ड लगाया हुआ है, जिसके चलते बाइक सवारों एवं छोटे वाहनों को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। खोड सर्विस रोड पर इन दिनों ठंड के साथ कोहरे का असर बनेगा, लेकिन फिर भी अधिकारी इस तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहे है। युवा सत्यप्रकाश ने बताया कि खोड़ सर्विस रोड पर वाहन तेजी से निकलते हैं। ब्रेकर तो बना हुआ है, लेकिन जब वहां उस ब्रेकर से निकलता है तो अटेली से तिगरा सड़क रोड के बीच से निकलता है तो स्पीड ज्यादा तेज हो जाती है, जिससे अटेली से आ रहे वाहन को दिखाई नहीं देता है, जिससे कभी भी हादसा हो सकता है। वहीं सर्विस रोड के बीच में लाल कलर के ट्रैफिक शंकु भी बीच में गिरे हुए हैं। इसके अलावा संकेतक बोर्ड न होने से हादसों की का खतरा बना रहता है। यहां आए दिन दोपहिया वाहनों का किसी न किसी के साथ हादसा होता रहता है। उन्होंने प्रशासन से सांकेतिक बोर्ड के साथ खोड सर्विस रोड के चौराहे पर स्पीड ब्रेकर एवं लाईट लगाने मांग की है।

एमआर स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता का भव्य समापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

एमआर पब्लिक स्कूलए मित्रपुरा में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक स्पोर्ट्स मीट स्पर्धा का समापन हुआ। इस अवसर आयोजित लड़कियों की 100 मीटर रेस में जीविका, वंदना प्रथम, उर्मिला, आरवी द्वितीय, महक, नितिका तृतीय, कक्षा छठीं 200 मीटठर रेस में वंदना प्रथम, आरवी द्वितीय, निकिता तृतीय, कक्षा सातवीं मोहनी प्रथम, आराध्या द्वितीय, माही तृतीय, आठवीं 100 मीटर रेस मे परी प्रथम, नेहा द्वितीय व पलक तृतीय रही। इसी तरह रिले रेस में नेहा, परी, साक्षी, आनिया प्रथम, जीविका, अंकाशा, पलक, खुशी द्वितीय, वंदना, इशिका, गरिमा, चिंकी तृतीय, कक्षा नौवीं 400 मीटर रेस में खुशी प्रथम, रितिका द्वितीय, रिया तृतीय स्थान पर रही। लड़कों की कक्षा सातवीं 100 मीटर रेस में नितिन प्रथम, प्रीक्षित द्वितीय, हर्ष तृतीय, 200 मीटर में प्रवीण प्रथम, आयुष द्वितीय, विहान तृतीय, 400 मीटर में जय प्रथम, हर्ष द्वितीय, भाविन तृतीय, कक्षा आठवीं 200 मीटर में जयवीर प्रथम, आयुष द्वितीय, चिराग तृतीय, कक्षा नौवीं 400 मीटर रेस में कार्तिक प्रथम, भावेश द्वितीय, चेतन तृतीय, 10वीं कक्षा 400 मीटर में अनिश प्रथम, इकेश द्वितीय, अनुज तृतीय, 400 मीटर ओपन रेस में अक्षित प्रथम, पंकज द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

खबर संक्षेप

गुरु तेग बहादुर के नाटक का होगा मंचन

महेंद्रगढ़। गुरु तेग बहादुर की शहादत पर आधारित संगीतमय नाटक तप से त्याग तक का संगीतमय मंचन शीघ्र ही महेंद्रगढ़ में भी किया जाएगा। कश्मीरी हिंदू प्रकोष्ठ व सार्थक नाट्य मंच के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया जाएगा। इस संगीतमय नाटक का मंचन देश के कोने कोने में किया जा चुका है। याहा निदेशक अनिल कौशिक ने बताया कि गुरु तेग बहादुर सिखों के नौवें गुरु थे, जिन्होंने अनेक वर्षों तक सिखों का नेतृत्व किया। साथ ही धर्म व सिद्धांतों की रक्षा के लिया शहादत दी। उन्हें हिंद की चादर के नाम से भी जाना जाता है। इस नाटक के मंचन के लिए संस्था द्वारा कश्मीरी हिंदू प्रकोष्ठ को अनुरोध पत्र भेजा गया है। गत दिवस इस खूबसूरत नाटक का मंचन अप्रैल हाउस गुरुग्राम में भी किया जा चुका है।

अरुणा बनी आर्य समाज जिला इकाई की प्रधान

नारनौल। आर्य समाज जिला इकाई की कार्यकारिणी का गठन किया गया है, जिसमें अरुणा जांगड़ा को जिला प्रधान नियुक्त किया गया। उनके साथ वेदप्रकाश शर्मा को उपप्रधान, योगाचार्य विश्वास पाल आर्य को सचिव, जयप्रकाश यादव को उपसचिव, सुरेश कुमार यादव को कोषाध्यक्ष, अधिवक्ता सुधीर कुमार को कानूनी सलाहकार व वेदप्रकाश आर्य को संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई। आर्य उपदेशक डॉ. कृष्ण कुमार आर्य व वासुदेव आर्य के संरक्षण में नवनियुक्त कमेटी का स्वागत किया गया। उल्लेखनीय है कि अरुणा जांगड़ा के पति मनोज जांगड़ा पूर्व में नगर परिषद के उपप्रधान रह चुके हैं तथा वह एक प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखते हैं। समाज सेवा कार्यों में उनकी अग्रणी रूप में गिनती होती है। अरुणा जांगड़ा की नियुक्ति पर विधायक ओमप्रकाश यादव ने उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी आर्य समाज परिवार से संबंध रखते हैं और अरुणा जांगड़ा के प्रधान बनने से जिले में आर्य समाज की गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

अरुणा जांगड़ा।

12वां श्रीश्याम फाल्गुन महोत्सव 14 फरवरी को

कनीना। पुरानी अनाज मंडी में आगामी 14 फरवरी को 12वें श्रीश्याम फाल्गुन महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। श्रीश्याम मित्र मंडल की ओर से आयोजित होने वाले इस समारोह में गायक कलाकार श्रीश्याम बाबा के भजनों की प्रस्तुती देंगे। अनिल गुप्ता ने बताया कि समारोह की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि महोत्सव के उपरांत 22 फरवरी को 11वीं निशान पदयात्रा शुरू होगी, जो हुड़िया जैतपुर के लिए रवाना होगी। इसके बाद 27 फरवरी को राधा कृष्ण मंदिर कनीना मंडी से निशान पदयात्रा प्रारंभ होगी, जो श्रीश्याम मंदिर बस स्टैंड कनीना पहुंचेगी।

हरियाणा एनसीआर दिल्ली के तापमान में गिरावट आएगी

बदलेगा मौसम, 29 को सक्रिय होगा नया पश्चिमी विक्षोभ

मौसम बदलने से धुंध, कोहरा व शीतलहर की सम्भावना है, वहीं, तापमान में भी उतार चढ़ाव दिखाई देगा।

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

हरियाणा एनसीआर दिल्ली में एक बार फिर से मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है, साथ ही सम्पूर्ण इलाके में दिन व रात के तापमान में गिरावट देखने को मिल रही है। वर्तमान में एक नया पश्चिमी विक्षोभ उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों पर सक्रिय होने से उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों पर बर्फबारी जारी है और मैदानी राज्यों विशेषकर हरियाणा एनसीआर दिल्ली में कहीं कहीं आंशिक बादलवाही देखने को मिल रही है। इस पश्चिमी मौसम प्रणाली से मैदानी इलाकों में दक्षिणी पूर्वी हवाओं से सम्पूर्ण हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों पर दिन के तापमान में गिरावट देखने को मिल रही, जबकि रात्रि तापमान में हल्की बढ़त देखने को मिल रही है। यानी दिन और रात के तापमान में उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों पर दिन और रात के तापमान सामान्य से नीचे बने हुए हैं। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में सबसे कम दिन का तापमान 12.0 डिग्री सेल्सियस मेवात में दर्ज किया गया, जबकि रात का तापमान सबसे कम 5.3 जींद का दर्ज हुआ। बार बार कमजोर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने मैदानी राज्यों में बारिश की गतिविधियां नदारद है। जिसकी वजह से सर्दी की सुंदरता धुंध, कोहरा, शीतलहर के दिनों में भी बार बार रूकावट बनी हुई है।

यानी इन गतिविधियों में बार उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा। इस मौसम प्रणाली से उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों पर बर्फबारी व बारिश की गतिविधियां देखने को मिलेगी, जबकि मैदानी राज्यों विशेषकर हरियाणा के उत्तरी जिलों में छिट-पुट बूंदाबांदी व शेष हरियाणा एनसीआर दिल्ली में आंशिक बादलवाही देखने को मिलेगी। इस पश्चिमी मौसम प्रणाली से लगातार दक्षिणी पूर्वी हवाओं से सम्पूर्ण इलाके में नमी की मात्रा में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। जिसके कारण हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अगर हवाएं शांत बनी रही, तो सुबह के समय धुंध व कोहरा की सम्भावना बन रही है।

तापमान में आएगी गिरावट

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चंद्रमोहन ने बताया कि 21-22 दिसम्बर को हरियाणा के पूर्वी हिस्से, जबकि 23-24 पश्चिमी और दक्षिणी हिस्सों में धुंध कोहरा देखने को मिलेगा। यह मौसम प्रणाली जैसे ही आगे निकल जाएगी, वैसे ही उत्तरी बर्फिली सर्द हवाओं से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में दिन व रात के तापमान में गिरावट और धुंध कोहरा, शीतलहर की सम्भावना बन रही है। इसके अलावा 29 दिसंबर को एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में एक बार फिर से मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। जिला महेंद्रगढ़ में नारनौल व महेंद्रगढ़ का दिन और रात का तापमान क्रमशः= 20.0 व 5.8 डिग्री सेल्सियस और 24.8 व 6.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

सीलिंग प्लान के तहत नियम तोड़ने वालों के काटे चालान

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिले में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने, अपराधों पर अंकुश लगाने व आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पुलिस की ओर से शुक्रवार शाम सीलिंग अभियान चलाया गया। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ के दिशानिर्देशों के तहत पूरे जिले में पुलिस बल ने मुस्तैदी के साथ व्यापक वाहन चेकिंग की। सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद रखने और किसी भी आपातकालीन स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए जिले के विभिन्न मार्गों, चौराहों व संवेदनशील स्थानों पर विशेष नाकाबंदी की गई थी।

गाड़ी की तलाशी लेती पुलिस।

वाहनों को जांचा

इस दौरान चेकिंग टीमों ने दोपहिया, चारपहिया, हल्के व भारी वाहनों समेत सभी प्रकार के वाहनों की गहनता से जांच की गई। पुलिसकर्मियों ने न केवल यातायात नियमों की अनुपालना जांची, बल्कि संदिग्ध गतिविधियों और व्यक्तियों पर भी पैनी नजर रखी। नाकाबंदी के दौरान प्रत्येक वाहन की बारीकी से तलाशी ली गई, ताकि किसी भी प्रकार की अवैध सामग्री या संदिग्ध गतिविधि की संभावना को समाप्त किया जा सके। इस दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए चालान भी काटे गए।

बांग्लादेश में हिंदुओं को जलाने पर जताया आक्रोश

नांगल चौधरी। बांग्लादेश में अराजक तत्वों ने निर्दोष हिंदुओं को जला दिया। जिससे आक्रोशित हिंदू महासभा ने प्रदेशाध्यक्ष सतीश रावत की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की। जिसमें सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके प्रधानमंत्री को भेजा गया। जिसमें हिंदू पर हो रहे अत्याचार बंद कराने तथा अराजकतत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करवाने की गुहार लगाई। उन्होंने बताया कि हिंदू समाज में अराजकता फैलाने की परंपरा नहीं है। सभी धर्मों को सम्मान देने और भाईचारे पूर्वक रहने के सिद्धांत हैं, लेकिन पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में आंतकी युवाओं में तांडव मचाना आरंभ कर दिया।

प्रदेशाध्यक्ष सतीश रावत

अविश्वास प्रस्ताव कांग्रेस की हताशा का प्रतीकः प्रो. रामबिलास शर्मा

■ पिछले पांच वर्षों में तीसरी बार लाया गया अविश्वास प्रस्ताव गिरा

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने कांग्रेस द्वारा भाजपा सरकार के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव को हताशा और निराशा का प्रतीक बताया है। उन्होंने प्रेस के नाम जारी बयान में कहा कि पहले से ही स्पष्ट था कि संख्या बल के अभाव में कांग्रेस का अविश्वास प्रस्ताव पारित नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी द्वारा पिछले पांच वर्षों में तीसरी बार हरियाणा की भाजपा सरकार के खिलाफ सदन में लाया गया अविश्वास प्रस्ताव गिर गया है। यह कांग्रेस की हताशा, निराशा और लगातार गिरते जनाधार को दर्शाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि जनता बार-बार कांग्रेस को नकार रही है। प्रो. शर्मा ने कहा कि हरियाणा के इतिहास में यह पहली बार है, जब प्रदेश की जनता ने लगातार तीसरी बार एक ही पार्टी को पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता सौंपी है। वर्ष 1966 में हरियाणा के गठन के बाद अब तक कोई भी सरकार लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई थी।

पूर्व मंत्री रामबिलास शर्मा।

महेंद्रगढ़ को अतिक्रमण मुक्त बनाने में आमजन का सहयोग जरूरीः एसडीएम

■ अतिक्रमण मुक्त महेंद्रगढ़ के लिए स्कूली बच्चों ने निकाली जागरूकता रैली

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

अतिक्रमण मुक्त महेंद्रगढ़ अभियान के तहत राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल के विद्यार्थियों ने शहर में जागरुकता रैली निकाली। जागरूकता रैली को एसडीएम कनिका गोयल ने स्थानीय अम्बेडकर चौक से रवाना किया। विद्यार्थियों ने अतिक्रमण मुक्त महेंद्रगढ़ के पोस्टर व बैनर के माध्यम से दुकानदारों को पक्के अतिक्रमण हटाने के लिए जागरुक किया। जागरूकता रैली अम्बेडकर चौक से शॉपिंग कॉम्प्लेक्स होते हुए नगर पालिका कार्यालय पहुंची। एसडीएम कनिका गोयल ने कहा कि महेंद्रगढ़ शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए प्रशासन का सहयोग करना चाहिए।

महेंद्रगढ़। जागरूकता रैली निकालते विद्यार्थी। *फोटो: हरिभूमि*

सड़कों पर समान न रखें

दुकानदार सड़कों पर अपना कोई भी स्थाई या बेचने वाली सामान ना रखें। सभी दुकानदार अपने अधिकृत क्षेत्र में ही अपना सामान रखें, जिससे आमजन को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़ें। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी अलका, प्राचार्य जयपाल सिंह सहित अनेक शिक्षक उपस्थित रहे।

सुशासन सप्ताहः प्रशासन गांवों की ओर अभियान

एक ही दिन में 161 इंतकाल किए दर्ज

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सुशासन सप्ताह के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन महेंद्रगढ़ की ओर से मुख्यमंत्री के विजन को धरातल पर उतारते हुए शुक्रवार को प्रशासन गांवों की ओर अभियान का शानदार आगाज किया गया। उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार के मार्गदर्शन में जिले की सभी तहसीलों में विशेष राजस्व कैंप आयोजित किए गए। इन कैंपों का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों की राजस्व संबंधी समस्याओं का मौके पर ही निपटारा करना और सरकारी सेवाओं को उनके घर के द्वार तक पहुंचाना था। विशेष कैंपों के दौरान राजस्व विभाग ने तत्परता दिखाते हुए विभिन्न सेवाओं का लाभ जनता तक पहुंचाया। जिला राजस्व अधिकारी राकेश कुमार ने बताया कि इन कैंपों का आयोजन यह सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है कि आमजन को छोटे छोटे कार्यों के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर न काटने पड़ें। प्रशासन गांवों की ओर की यह पहल पारदर्शिता और जवाबदेही की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो रही है।

नारनौल। तलोट गांव में नागरिकों की समस्याएं सुनते तहसील अधिकारी।

ये कैंप के पहले दिन के आंकड़े

इंतकालः सबसे अधिक सक्रियता इंतकाल के मामलों में देखी गई, जहां पूरे जिले में कुल 161 इंतकाल दर्ज किए गए। नांगल चौधरी तहसील में सर्वाधिक 68 इंतकाल किए गए, इसके बाद कनीना में 40, महेंद्रगढ़ में 22, अटेली में 18 और नारनौल में 13 इंतकाल दर्ज हुए। इंतकाल के अलावा चार पैमाइश के मामले सुलझाए गए और छह समाधान शिविरों के माध्यम से शिकायतों का निवारण किया गया।

जन शिकायत निवारणः कैंप के दौरान दो सीएम विंडो शिकायतों और एक सीपी ग्राम मामले पर भी कार्रवाई की गई।
सत्यापन कार्यः पटवारी, कानूनगो और सीआरओ स्तर पर कुल 108 सत्यापन कार्य पूरे किए गए। जिससे नागरिकों को प्रमाण पत्रों के लिए भटकना न पड़े। इसके अलावा नांगल चौधरी तहसील बंटवारा के दो मामले, गिरदावरी दुरुस्ती का एक मामला और जनसंवाद के पांच मामले जैसी विविध सेवाओं का लाभ लोगों को मिला।

अशोक लोहमरोड बने महेंद्रगढ़ ब्लॉक प्रधान

■ अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ-2107 संबंधित भारतीय मजदूर संघ की बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी का गठन किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

नागरिक अस्पताल महेंद्रगढ़ के प्रांगण में अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ–2107 संबंधित भारतीय मजदूर संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक में पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस दौरान अशोक लोहमरोड को सर्वसम्मति से दोबारा ब्लॉक प्रधान चुना गया। इस चुनावी प्रक्रिया में जिला प्रधान विक्रम जांगड़ा, जिला सचिव पवन, कोषाध्यक्ष कर्मवीर, नारनौल ब्लॉक प्रधान संतोष तथा जिला कार्यकारिणी सदस्य छाजूराम व नीरज कुमार मुख्य रूप से उपस्थित रहे। सभी की सहमति से अशोक लोहमरोड के नाम पर मुहर लगाई गई। कार्यक्रम में विशेष रूप से पहुंचे एसएमओ डॉ. जयप्रकाश और आरएमओ डॉ. अभिषेक सैनी ने नवनिर्वाचित टीम को शुभकामनाएं दीं। अधिकारियों ने कर्मचारियों के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें किसी भी कर्मचारी से कोई शिकायत नहीं है। उनके इन शब्दों ने एचकेआरएनएल कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाया और कार्य के प्रति ईमानदारी व एकजुटता का संदेश दिया। दोबारा जिम्मेदारी मिलने पर अशोक लोहमरोड ने सभी साथियों का आभार जताते हुए कहा कि आप सभी मेरे परिवार का हिस्सा हैं।

महेंद्रगढ़। नवनिर्वाचित प्रधान को बधाई देते स्टाफ सदस्य। *फोटो: हरिभूमि*

ये मौजूद रहे

इस अवसर पर योगेश, ललित, विक्की वर्मा, गौरव, अमित, प्रकाश, अजीत, मुकेश बाला, पूजा, पूनम, वंदना, विमला, सोनू, प्रदीप, मनोज, ओमप्रकाश, संदीप, सुधीर, राजेश और नीतू सहित भारी संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे।

शिविर में 93 मरीजों का स्वास्थ्य चेकअप

■ चिकित्सा शिविर का शुभारंभ जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. शशि बाला ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ निजामपुर

जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सुशासन सप्ताह के निःशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन आयुष आरोग्य मंदिर खातोली अहीर में किया गया। जिसका शुभारंभ जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. शशि बाला ने भगवान धन्वंतरि की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

उन्होंने कहा कि निःशुल्क शिविर का मुख्य उद्देश्य आमजन को आयुष पद्धति से स्वास्थ्य लाभ देना है। अब हेमंत ऋतु में सर्दी जुकाम, वात, दमा आदि रोग होने की संभावना रहती हैं, इसलिए सभी को खानपान का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

निजामपुर। शिविर में मरीजों की जांच करते चिकित्सक। *फोटो: हरिभूमि*

मोटे अनाज, बाजरा और रागी का करें प्रयोग

इस ऋतु में भारी पदार्थ जैसे मोटे अनाज, बाजरा और रागी का प्रयोग करना चाहिए। जिससे शरीर में कैल्शियम व आयरन की पूर्ति हो सके। डॉ. भूपेंद्र कुमार ने बताया कि शिविर में 93 मरीजों का आयुर्वेदिक पद्धति ने निःशुल्क उपचार व परामर्श दिया गया। शिविर में रोग प्रति रोधक शमता बढ़ाने के लिए गिलोय काढ़े का सेवन भी आए आमजन को कराया गया। आयुष योग सहायक सुरेन्द्र कुमार ने सभी को सूक्ष्म व्यायाम का अभ्यास कराया। शिविर में सरपंच प्रतिनिधि के अलावा आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. विनय कुमार व होम्योपैथिक फार्मासिस्ट राकेश कुमार, फार्मासिस्ट नीरज, स्टाफ नर्स फूल कुमार, सीएचओ एकता व ग्रामीण मौजूद रहे।

मार्केट कमेटी चेयरमैन एवं वाइस चेयरमैन ने चलाया सफाई अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ मंडी अटेली

अटेली अनाज मंडी में शनिवार को स्वच्छता अभियान के तहत मंडी परिसर में मार्केट कमेटी के चेयरमैन दिनेश जेलदार एवं वाइस चेयरमैन राधेश्याम गोयल मंडी परिसर में स्वच्छता का संदेश देते हुए सफाई अभियान चलाया, जिसमें मंडी के आढ़तियों किसानों ने भी अपना सहयोग दिया। इसके तहत मंडी के चारों तरफ सफाई कर्मियों के साथ दूसरे कर्मियों ने हाथों में झाड़ू लेकर घंटों तक सफाई की। इस मौके पर चेयरमैन दिनेश जेलदार ने बताया कि प्रदेश सरकार स्वच्छता अभियान लगातार चलती रहती है।

मंडी अटेली। झाड़ू लगाकर सफाई करते हुए।

स्वच्छता में ईश्वर का वास

स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है। इसलिए सभी को अपने घरों और आसपास की जगहों की साफ-सफाई बनाए रखनी चाहिए। उन्होंने नागरिकों और दुकानदारों से कहा कि वे सफाई अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें। वहीं वॉइस चेयरमैन राधेश्याम गोयल ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य अटेली क्षेत्रों में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना प्लास्टिक के उपयोग को कम करना तथा नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है।

कार्यक्रम एडवोकेट की ओर से तीन विद्यालयों में शिक्षा की सवामणी कार्यक्रम आयोजित

पेट की बजाय ज्ञान की भूख मिटा रहा शिक्षा की सवामणी अभियानः नरेंद्र यादव एडवोकेट

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट के माध्यम से एडवोकेट नरेंद्र यादव 'गुवानी' द्वारा 'शिक्षा की सवामणी' प्रकल्प के अंतर्गत शनिवार तीन शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जरूरतमंद बच्चों को लेखन सामग्री उपलब्ध कराकर उन्हें प्रोत्साहित करना रहा। कार्यक्रम की शुरुआत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मारोली से हुई, जहां 'शिक्षा की सवामणी' के रूप में विद्यार्थियों को लेखन सामग्री प्रसाद स्वरूप वितरित की गई। इस अवसर पर एडवोकेट नरेंद्र यादव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि "शिक्षा की सवामणी कोई औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक विचार और संकल्प है, जिसके माध्यम से समाज के प्रत्येक बच्चे तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाई जा सकती है।

नारनौल। शिक्षा की सवामणी में प्रसाद ग्रहण करते बच्चे। *फोटो: हरिभूमि*

शिक्षा की अलख जगाना

शिक्षा की सवामणी पेट की बजाय ज्ञान की भूख मिटाने का काम करती है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट का उद्देश्य शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखते हुए उसे सेवा, संस्कार और सामाजिक दायित्व से जोड़ना है। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के रूप पर्यावरणविद कृष्ण कुमार एडवोकेट एवं नर नारायण सेवा समिति के अध्यक्ष रामसिंह मधुर मौजूद रहे।

अनोखी सवामणी

इसके पश्चात दूसरा कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अकबरपुर में आयोजित किया गया। विद्यालय प्रवक्ता दिनेश गांधी ने बताया कि यहां भी विद्यार्थियों को लेखन सामग्री के रूप में 'शिक्षा की सवामणी' का प्रसाद वितरित किया गया। तृतीय एवं अंतिम कार्यक्रम राजकीय माध्यमिक विद्यालय नंगली में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में आभार प्रकट करते हुए मुख्य अध्यापक रणवीर आर्य ने कहा कि ऐसी अनोखी सवामणी बहुत कम देखने को मिलती है।

क्रिसमस स्पेशल

सदियों से मनाया जा रहा प्रभु यीशु के जन्मोत्सव को समर्पित क्रिसमस का पर्व, अब किसी एक क्षेत्र या वर्ग का नहीं ग्लोबल फेस्टिवल बन चुका है। वैश्विक प्रेरणाओं, मानवीय मूल्यों और व्यक्तिगत संवेदनाओं के संगम से आज का क्रिसमस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम सिर्फ उत्सव न मनाएं बल्कि उत्सव बन जाएं। यही इस दौर के क्रिसमस की सबसे बड़ी और सबसे सकारात्मक उपलब्धि है।

{ कवर स्टोरी / आर. सी. शर्मा }

खुशी-उल्लास-उमंग का ग्लोबल फेस्टिवल क्रिसमस

क्रिसमस एक ऐसा पर्व है जो एक समय तक धार्मिक उत्सव के रूप में मनाया जाता था, लेकिन आज इक्कीसवीं सदी में यह वैश्विक संवेदना, मानवीय एकजुटता और सामूहिक खुशी का प्रतीक बन चुका है। बदलती तकनीक, तेज रफ्तार जीवनशैली, वैश्वीकरण और सामाजिक विविधताओं के बीच भी क्रिसमस का रोमांच कम नहीं हुआ बल्कि कई अर्थों में और गहरा हुआ है।

परंपरा-आधुनिकता का संगम

आज के दौर में क्रिसमस सिर्फ चर्च की घंटियों, कैरोल्स गाने या क्रिसमस ट्री सजाने तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक ऐसा अवसर बन चुका है, जहां परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। सोशल मीडिया पर फैली रोशनियां, डिजिटल ग्रीटिंग्स, वर्चुअल पार्टियां और ऑनलाइन गिफ्टिंग, इन सबने क्रिसमस को एक नए स्वरूप से सजा दिया है। जहां पहले क्रिसमस का अनुभव स्थानीय समुदाय तक सीमित रहता था, वहीं आज यह एक ग्लोबल इवेंट बन गया है। न्यूयॉर्क की सड़कों से लेकर टोक्यो, मुंबई और नैरोबी तक हर जगह क्रिसमस की सजावट, संगीत और उल्लास एक साझा भाव पैदा करता है।

खुशियों का नया एहसास

हाल के दशकों में क्रिसमस को लेकर हमारी भावनाओं में निश्चित ही बदलाव आया है। आधुनिक जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और अकेलापन बढ़ा है। ऐसे में क्रिसमस एक भावनात्मक विराम की तरह आता है, जहां लोग रुककर रिश्तों, यादों और मानवीय जुड़ाव को महत्व देते हैं। आज की खुशियां सिर्फ उपहारों तक सीमित नहीं रहीं। मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सुरक्षा और साथ होने की अनुभूति अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। क्रिसमस के समय परिवार या दोस्तों के साथ बैठकर खाना खाना, पुरानी यादें साझा करना या किसी जरूरतमंद की मदद करना, इन सबमें एक गहरी संतुष्टि छिपी है। यानी खुशी की मात्रा नहीं, लेकिन उसकी गुणवत्ता बदली है। यह अधिक संवेदनशील और अधिक मानवीय हुई है।

करुणा-साझेदारी की प्रेरणा

इक्कीसवीं सदी का क्रिसमस हमें कुछ बेहद महत्वपूर्ण वैश्विक प्रेरणाएं देता है। आज क्रिसमस के साथ चैरिटी, फूड डाइव्स, शेल्टर होम्स और ऑनलाइन फंड रेजिंग जुड़ चुके हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि सच्चा उत्सव तभी है, जब खुशियां दूसरों के संग बांटी जाएं। क्रिसमस अब सिर्फ ईसाइयों का पर्व नहीं रह गया। गैर-ईसाई समाज भी इसे एक मानवीय और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाता है, जो विविधता में एकता का संदेश देता है। युद्ध, संघर्ष और अस्थिरता के वर्तमान दौर में क्रिसमस का 'पीस ऑन अर्थ' वाला विचार, पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। यह हमें याद दिलाता है कि शांति कोई अमूर्त सपना नहीं बल्कि रोजमर्रा के छोटे व्यवहारों से भी संभव है।

महत्वपूर्ण है अर्थपूर्ण उत्सव

यह सच है कि आधुनिक क्रिसमस में बाजार का प्रभाव बढ़ा है- सेल्स, ऑफर्स और ब्रांडिंग हर जगह दिखती है। लेकिन इसके समानांतर एक नई सोच भी उभर रही है, मिनिमल और अर्थपूर्ण क्रिसमस। आज कई लोग 'कम खरीदो, बेहतर जियो' के विचार के साथ क्रिसमस मना रहे हैं। हैंडमेड गिफ्ट्स, अनुभव आधारित उपहार (जैसे समय देना, साथ घूमना) और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार सजावट। ये बदलाव बताते हैं कि खुशी की अतिरिक्त परतें दिखावे से नहीं, सार्थकता से आती हैं।

क्रिसमस मनाने के ऐतिहासिक-धार्मिक संदर्भ

क्रिसमस ईसाई धर्म का सबसे बड़ा पर्व है, जिसे यीशु मसीह के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है। ईसाई मान्यता के अनुसार यीशु का जन्म मानवता को पाप, हिंसा और अन्याय से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था। बाइबिल की कथा के अनुसार, यीशु का जन्म बेथलेहम में एक गौशाला में हुआ, जहां उनकी माता मरियम ने उन्हें जन्म दिया और यूसुफ उनके संरक्षक थे। यह कथा ईसाई धर्म में विनम्रता, त्याग और करुणा का मूल प्रतीक मानी जाती है। 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाने की परंपरा यीशु के जन्मदिन से जुड़ी है। इतिहासकारों के अनुसार चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य ने 25 दिसंबर को यीशु के जन्म दिवस के रूप में स्वीकार किया। इसका एक कारण यह भी था कि इसी समय रोम में 'सैटर्नेलिया' और 'सोल इन्विक्टस' जैसे सूर्य-उत्सव मनाए जाते थे। ईसाई धर्म के प्रसार के दौरान इन लोकप्रिय पर्वों को एक नए धार्मिक अर्थ के साथ जोड़ा गया, जिससे क्रिसमस व्यापक रूप से स्वीकार्य हो सका।

धार्मिक दृष्टि से क्रिसमस सिर्फ जन्मोत्सव नहीं बल्कि ईश्वर के प्रेम के अवतरण का प्रतीक है। ईसाई आस्था के अनुसार यीशु 'ईश्वर के पुत्र' हैं, जो मानव रूप में धरती पर आए ताकि प्रेम, क्षमा और दया का संदेश दे सकें। इसी कारण क्रिसमस के दौरान चर्चों में विशेष प्रार्थनाएं, मध्यरात्रि मिस्सा, कैरोल गायन और बाइबिल पाठ किए जाते हैं।

क्रिसमस सेलिब्रेशन से जुड़ी परंपराएं

क्रिसमस को पारंपरिक रूप से एक धार्मिक, पारिवारिक और सामुदायिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसकी तैयारियां एडवेंट काल से शुरू होती हैं, जो क्रिसमस से लगभग चार सप्ताह पहले आता है। इस दौरान लोग आत्मचिंतन, प्रार्थना और संयम पर ध्यान देते हैं। कई परिवार, घरों में एडवेंट कैंडल जलाते हैं, जो आशा और प्रकाश का प्रतीक मानी जाती है। घरों और चर्चों की सजावट, क्रिसमस की सबसे प्रमुख परंपरा है। क्रिसमस-ट्री सजाना भी इसका प्रमुख अंग है, जिसे रोशनी, सितारों, घंटियों और सजावटी गेंदों से सजाया जाता है। ट्री के ऊपर लगाया जाने वाला तारा बेथलेहम के उस तारे का प्रतीक है, जिसने तीन ज्ञानी पुरुषों को यीशु के जन्मस्थल तक पहुंचाया था। साथ ही कई स्थलों पर नैटिविटी सीन (यीशु के जन्म का दृश्य) लगाया जाता है। क्रिसमस ईव (24 दिसंबर की रात) को चर्चों में मिडनाइट मास होती है, जिसमें प्रार्थना, बाइबिल पाठ और सामूहिक कैरोल्स गाए जाते हैं। क्रिसमस के दिन परिवार और मित्र एक साथ मिलते हैं, विशेष भोज का आयोजन होता है और एक-दूसरे को उपहार दिए जाते हैं। बच्चों के लिए सांता क्लॉज की परिकल्पना खास आकर्षण होती है, जो उदारता और खुशी बांटने का प्रतीक है।

सकारात्मक प्रेरणाओं का उत्स

आज के संदर्भ में क्रिसमस हमें तीन सबसे सकारात्मक बातें सिखाता है।

उम्मीद: चाहे दुनिया कितनी भी अनिश्चित क्यों न हो, क्रिसमस उम्मीद का पर्व है। यह नए सिरे से शुरू करने की प्रेरणा देता है।

रिश्तों की प्राथमिकता: यह पर्व याद दिलाता है कि जीवन की असली पूंजी हमारे संबंध हैं, न कि भौतिक उपलब्धियां।

मानवीय गरिमा: क्रिसमस का मूल संदेश- प्रेम, क्षमा और करुणा, आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना सदियों पहले था। कहने का सार यही है कि इक्कीसवीं सदी में क्रिसमस फेस्टिवल का रोमांच बाहरी चमक से ज्यादा आंतरिक अर्थ में बसता है। हमारी खुशियां शायद अधिक सजावटी नहीं हुईं, लेकिन अधिक सजग जरूर हुई हैं। *

{ अमेजिंग / शिखर चंद जैन }

दुनिया के सबसे अनूठे क्रिसमस-ट्री

क्रिसमस के अवसर पर दुनिया भर में बेशुमार क्रिसमस ट्री सजाए जाते हैं। लेकिन कुछ क्रिसमस ट्री इतने अनूठे तरीके से सजाए जाते हैं कि उनकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां हम आपको दुनिया के कुछ ऐसे ही अमेजिंग क्रिसमस ट्री के बारे में बता रहे हैं।

क्रिसमस का उत्सव क्रिसमस-ट्री के बिना अधूरा है। वैसे तो क्रिसमस-ट्री वास्तव में पाइन, देवदार, बालसम या फर का पेड़ होता है। ये पेड़ सदा हरे-भरे रहते हैं इसलिए, इन्हें सजावट के लिए चुना जाता है। लेकिन दुनिया भर में अलग-अलग चीजों के उपयोग से एक से बढ़कर एक कृत्रिम क्रिसमस-ट्री भी खूब बनाए और सजाए जाते हैं। आइए जानते हैं कुछ अनूठे क्रिसमस-ट्री के बारे में।

टंबलवीड ट्री यूएसए: चांडलर, संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना राज्य में मैरिकोपा काउंटी में स्थित एक शहर और फीनिक्स का एक उपनगर है। यह तकनीक और नवाचार का एक प्रमुख केंद्र है। यहां टंबलवीड-ट्री नामक प्रसिद्ध क्रिसमस-ट्री है, जिसे हर साल एक खास परंपरा के तहत बनाया जाता है। 1957 से चली आ रही इस परंपरा में हजारों टंबलवीड्स और रोशनी का उपयोग होता है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब आग लगने से शहर की क्रिसमस की सजावट नष्ट हो गई थी। तब लोगों ने इस अनूठे पेड़ का इस्तेमाल किया था। यह पारंपरिक क्रिसमस-ट्री की तरह नहीं है, बल्कि सूखी झाड़ियों (टंबलवीड्स) को इकट्ठा करके बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए लगभग 1,000 से अधिक टंबलवीड्स और 1,200 रंगीन बल्बों का उपयोग किया जाता है।

बिग क्रिसमस-ट्री इटली: यह दुनिया के सबसे अनूठे और सबसे ज्यादा लाइटों वाले क्रिसमस-ट्रीज में शामिल है। इटली के गुब्बीओ में माउंट इजिनो पर बना यह विशाल-ट्री 1981 से मौजूद है। यह दुनिया के सबसे बड़े क्रिसमस-ट्री के रूप में जाना जाता है, जिसे 1991 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था। यह माउंट इंगिनो की ढलान पर हजारों लाइटों और 7.5 किमी लंबे बिजली के तार से बना एक भव्य लाइट डेकोरेशन से बनता है, जो एक विशाल क्रिसमस-ट्री का आकार लेता है। इसकी ऊंचाई लगभग 750 मीटर और आधार पर चौड़ाई 450 मीटर होती है। इसे आमतौर पर 7 दिसंबर से 6 जनवरी तक सजाया जाता है। हर साल क्रिसमस के समय हजारों पर्यटक इसे देखने आते हैं।

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री
यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री, 3 दिसंबर की शाम से ही आम लोगों के देखने के लिए अपनी सजधज के साथ रेडी हो जाता है। यह 75 फुट ऊंचा नॉर्वे स्प्रूस पेड़ है, जो ईस्ट ग्रीनबुश, न्यूयॉर्क से लाया गया है। इसे मैनहट्टन के मध्य में 30 रॉकफेलर प्लाजा में सजाया जाता है। यह 10 जनवरी तक देखने के लिए उपलब्ध रहता है। 2004 से स्थापित यह क्रिसमस ट्री 30,000 एलईडी लाइटों से रोशन होता है, जो सौर पैनलों से चलती हैं। 2007 से इस पर 550 पाउंड का स्वारोवस्की क्रिस्टल स्टार लगा हुआ है।

स्काई ट्री जापान: क्रिसमस के अवसर पर जापान के टोक्यो में कई प्रसिद्ध क्रिसमस ट्री और लाइट-अप शोज डेकोरेट किए जाते हैं, जिनमें टोक्यो स्काई-ट्री का विशालकाय क्रिसमस-ट्री भी शामिल है। टोक्यो स्टेशन के मारुनोउची क्षेत्र के पास किट्टे बिल्डिंग के बाहर जापान का यह सबसे बड़ा क्रिसमस-ट्री सजाया जाता है। यह 14 मीटर ऊंचा है। इसे आकर्षक रोशनी से सजाया गया है। यहां लगभग 500,000 बल्ब्स का शो आयोजित होता है, जो 'क्विंकल थ्री स्टार्स' और अन्य लाइट-अप थीम के साथ प्रदर्शित किया जाता है। किट्टे बिल्डिंग टोक्यो में सबसे ऊंची इमारत है, जो इसका प्रतीक चिन्ह भी बन गया है। इनके निकट ही स्थित ग्योको-डोरी स्ट्रीट और नाका-डोरी स्ट्रीट को भी उत्सव की रोशनी से सजाया जाता है। इसके अतिरिक्त क्रिसमस के अवसर पर यहां के ओमोतेसांडो, रोपोंगी और ओडेबा जैसे कई क्षेत्रों में सुंदर लाइटिंग डिस्प्ले आयोजित किए जाते हैं।

ओरिगामी क्रिसमस-ट्री यूएसए: न्यूयॉर्क का वर्ल्ड फेमस ओरिगामी क्रिसमस-ट्री, किसी भी दूसरे क्रिसमस-ट्री से अलग है। यह अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (एएमएनएच) में मौजूद है। यह लगभग 13 फीट लंबा पेड़, कागज से बने हुए जानवरों, जड़ी-बूटियों और अन्य आकृतियों से सजाया जाता है, जो ओरिगामी कलाकारों द्वारा बनाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के ओरिगामी रंगों में सजा यह पेड़ देखने में बहुत आकर्षक और बेहद रंगीन लगता है। *

{ कविता / हेमधर शर्मा }

कृतज्ञता और कृतघ्नता

जो देता है हम उसे देवता कहते हैं
फिर क्यों हरदम लेने की
इच्छा रखते हैं?
जड़ जिन्हें समझते हैं हम
पौधे-पेड़ सभी तो देते हैं
फिर याचक बनकर ही
खुश क्यों हम रहते हैं?
हो सकता है हों बुद्धिमान हम
दुनिया में सबसे ज्यादा
खुदगर्ज बनाए लेकिन जो
क्या बुद्धि उसी को कहते हैं?
लेता है कोई काम अगर
प्रतिदान नहीं देता है तो
अन्यायी उसे समझते हैं
फिर जड़-चेतन सबसे लेकर
मन में कृतज्ञ भी हो न सके
ऐसा कृतघ्न मानव बनकर
कैसे हम सब जी लेते हैं?

{ व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय }

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके।

कैमरों की चमकती चंचल चाहतें

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके। वह तो यह कैमरा ही है, जिसके आते ही तमाम बाराती नागिन हो जाते हैं और उनकी रूमाल से अपने आप ही बीन की धुनें निकलने लग जाती हैं। सोचता हूं, कहीं कल जंगल में मोर भी यह कहकर नाचने से इनकार न कर दें कि इधर कैमरे तो हैं ही नहीं। जब कोई फिल्म ही नहीं बना रहा, तो फिर जंगल में ऐसे नाच का आखिर फायदा भी क्या?

धरना, प्रदर्शन, अनशन, घेराव, रैली, भाषण, चुनाव, सबको कैमरे चाहिए। वह भी ऐसे-वैसे नहीं, समाचार चैनलों वाले। एक नहीं, अनेक। हर कोण से कवरेज जरूरी है। जिस काम को दुनिया न देखे, वह काम भी किस काम का? जिन्हें इन कैमरों से ज्यादा लगाव होता है, ऐसे साहसी लोग गुप्त कैमरों से भी भय नहीं खाते। यह जानते हुए कि जमाना स्टिंग ऑपरेशन का है और कभी भी धरे जा सकते हैं, वे तब भी अपना असली काम कर ही डालते हैं।

'आप कैमरे की नजर में हैं।' मैं जहां कहीं पर भी यह बोर्ड लगा देखता हूं, मुझे हंसी आने लगती है। ऐसे बोर्ड चोर को पकड़ने के लिए लगाए गए होते हैं कि उन्हें सहयोग करने के लिए कि यहां हरकत की, तो तू पकड़ा जा सकता है। जा, बिना कैमरे वाली जगह तलाश। मैं सोचता हूं, यदि चोर भी सीसीटीवी कैमरों से भयग्रस्त होकर अपना चौर्य-कर्म त्याग चुके होते, तो हम आए दिन चोरी की वारदात की खबरें पढ़ने, सुनने और देखने को तरस जाते। क्या पता, कैमरा उन्हें नया उत्साह देता हो। अब तो कैमरों को प्रोफेशनल फोटोग्राफरों की दरकार भी नहीं रही। सभी के हाथों में मोबाइल कैमरे हैं और सेल्फियों की चमकती हुई चंचल चाहतें। इसके एकनेत्री स्वरूप पर आज पूरा विश्व मोहित है। तभी तो, युद्ध हो या शांति, लोग अपनी आंखों से अधिक इन कैमरों की दिखलाई हुई चीजों पर विश्वास करने लगे हैं। *

{ लघुकथा / चंद्रप्रकाश डाले }

उपेक्षा के आंसू

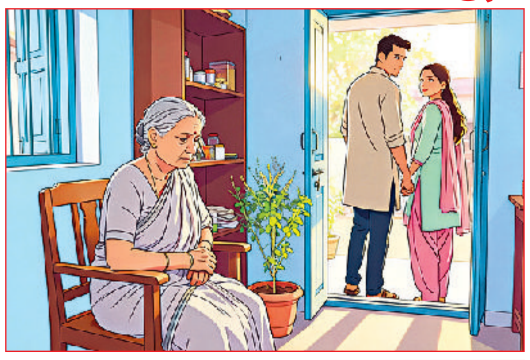
एआई इमेज

अस्पताल में चार दिनों से भर्ती सविता जी ने नर्स से पूछा, 'सिस्टर, मेरा बेटा आया था क्या?'

नर्स बोली, 'अरे माता जी, आप चार दिन से यही रट लगाए हैं कि बेटा आया है क्या, अरे आज तो आपकी छुट्टी होने वाली है।'

मां की आंखों में आंसू आ गए। रुंधे गले से बोलीं, 'मैं उसकी मां हूं ना। मैंने बड़ी तकलीफ, त्याग और तपस्या से उसको पाला है। इसलिए बार-बार उसके बारे में पूछती हूं। खैर, कोई बात नहीं।'

नर्स बोली, 'माता जी, बस आप तैयार हो जाइए, अस्पताल से छुट्टी मिल गई है, अब आपको घर जाना है, अपने बेटे के पास। आपके बिल वगैरह सब बन गए, उसका पेमेंट भी मिल चुका है।'

सविता ने फिर पूछा, 'मेरा बेटा लेने आया है क्या?'

'नहीं माता जी, ड्राइवर गाड़ी लेकर आया है।' नर्स ने बताया।

कुछ न कहकर, आंखों में आंसू छुपाते हुए सविता जी गाड़ी में बैठकर घर पहुंच गईं, लेकिन बेटे की उपेक्षा से खुद को थका हुआ और निराश महसूस कर रही थीं।

कुछ देर बाद ही बहू के मायके से फोन आया कि उसकी मां की तबियत खराब हो गई है। बहू ने तत्काल अपने पति को ऑफिस में फोन किया और बोली, 'आप तुरंत घर आ जाइए, मेरी मां की तबियत बहुत खराब है। और सुनो चार-पांच दिनों की छुट्टी भी ले लेना। मां को अस्पताल में भर्ती कराकर उनकी देखभाल के लिए वहां रुकना होगा।'

सासु मां की तबियत की खबर सुनकर सविता जी का बेटा तत्काल घर आ गया और जल्दी से तैयार होकर अपनी पत्नी के साथ ससुराल जाने लगा। दरवाजे से बाहर निकलते हुए जैसे उसे कुछ याद आया और वह पलटकर अपनी मां से बोला, 'मां, हम दोनों चार-पांच दिन के लिए जा रहे हैं। आप घर का ख्याल रखना।'

मां ने उन दोनों को जाते हुए देखा। मायूस होकर पास रखी कुर्सी पर बैठ गई। सोचने लगी, अस्पताल में भी वह अकेली थी, अब घर में भी अकेली है। साथ में थे तो सिर्फ आंसू। उपेक्षा से उपजे आंसू। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

अंतस को छूते गीत

वरिष्ठ साहित्यकार ओम निश्चल के गीतों का नया संग्रह 'तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं' हाल में छपकर आया है। आज के दौर में जब छंदमुक्त कविताओं की बाढ़ आई हुई है, ऐसे में अत्यंत कोमलता को खुद में समेटे हुए, रुई के फाहे-से ये गीत हमारी रूह को हौले से छू लेते हैं। इन गीतों में खास तौर पर प्रेम के अनेक रंग तो पैबस्त हैं ही, इनके साथ ही जीवन की विडंबनाएं, अलग-अलग ऋतुओं का सौंदर्य, खेती-किसानी, मिट्टी का सोंधापन, सांस्कृतिक नगरों की छटा, पारंपरिक पर्वों की आभा, ईश्वर के प्रति अहैतुक आस्था और कुछ अनकहे से रिश्तों की खुश्बू को भी शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। गीतों के रचाव और शब्दों के चयन में ओम जी प्रयोगधर्मी रहे हैं, किसी भाषा को लेकर उनकी रचनात्मकता में कोई हठधर्मिता नहीं दिखती है। इसके साथ ही वे पढ़ने वाले के अंतस में भावनाओं का अप्रतिम प्रतिसंसार भी रचते चलते हैं। इसकी बानगी संग्रह के कई गीतों में देखी जा सकती है। अतीत में घटित प्रेम को बेहद मार्मिकता से वे शब्दों में पिरोते हुए कहते हैं, *'पलकें बोझिल और उनींदी रातें होती थीं/बरसों पहले तुमसे कितनी बातें होती थीं।'* तो कहीं जीवन की क्रूरता के समक्ष विवश मन कराह उठता है, *'प्रार्थना में फूल, मन में अर्घ्य देकर/लौट आए डबडबाई आंख लेकर।'* कहीं अपने आराध्य प्रभु की भक्ति में गीतकार का मन पुलकित होकर गा उठता है, *'दीप घर-घर जले हैं अवध में पिया/आज लौटे अयोध्या में रघुवर-सिया।'* तो कहीं प्राचीन नगर के सांस्कृतिक वैभव को देखकर वे अंतस के उल्लास को व्यक्त करने से रोक नहीं पाते, *'काशी के घाट निराले, रे भैया/काशी के घाट निराले।'* और प्रेम मिलन को व्यक्त करती ये पंक्तियां तो बेमिसाल हैं, *'पलकों को होठों की धड़कन से छू लूं/सुनाऊं गजल कोई गालिब की तुमको/तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं।'* *

पुस्तकः तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं (गीत-संग्रह), रचनाकारः ओम निश्चल, मूल्यः 300 रुपए, प्रकाशकः हिंदी अकादमी, दिल्ली

अवसर जब क्रिसमस का हो तो केक का जिक्र होता ही है। घर-घर में इसे बनाया और फ्रेंड्स-रिलेटिव्स के संग एंज्वॉय भी किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केक बनाने की शुरुआत कब हुई? इसका आकार, स्वाद कैसे बदला? जानिए, केक से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

टेस्टी केक से जुड़ी अनूठी-रोचक बातें

रोचक / शिखर चंद जैन

बच्चे ही नहीं, बड़ी उम्र के भी अधिकांश लोगों को केक खाना पसंद होता है। किसी का बर्थडे हो या मैरिज एनिवर्सरी या कोई और सेलिब्रेशन, खुशी और जश्न के खास मौकों पर केक कट कर खिलाने का चलन है। केक खाने में जितने यमी होते हैं, उतनी ही दिलचस्प इससे जुड़ी कुछ बातें भी हैं। इनके बारे में यहां बता रहे हैं।

कैसा था शुरुआती केक: शुरुआती दौर में बनने वाले केक आज की तरह सॉफ्ट, डिजाइनर और अट्रैक्टिव नहीं होते थे। ये अनाज के बने हुए सघन और चपटे (डेंस और फ्लैट) होते थे। इन्हें पीसे हुए अनाजों में खमीर (यीस्ट) उठाकर बनाया जाता था। फिर इन्हें सुखाकर जमाया जाता था। आज हम जिस तरह के केक का आनंद लेते हैं, उनसे मिलते-जुलते केक 18वीं-19वीं शताब्दी में बनने शुरू हुए।

ऐसे हुई क्रिसमस केक की शुरुआत: रोम में शुरुआती दौर में क्रिसमस के अवसर पर मीठी रोटियां बनाई जाती थीं। मध्यकाल तक आते-आते इन मीठी रोटियों का स्थान प्लम-पॉरिज (आलू बुखारा, ओट्स, फ्रूट्स, ड्राय फ्रूट्स आदि मिलाकर बनाया गया दलिया) ने ले लिया। 16वीं सदी तक आटे, अंडे, मक्खन से प्लम केक बनने शुरू हो गए। इसे 'ट्वेल्थ नाइट केक' कहा जाता था। धीरे-धीरे ये ट्वेल्थ नाइट केक, क्रिसमस के उत्सव का एक अभिन्न हिस्सा बन गए। आज क्रिसमस के अवसर पर हम जो 'फ्रूट केक' या 'आइस्ड केक' खाते हैं, वह इसी ट्वेल्थ नाइट केक का अपडेटेड वर्जन है।

केक पर सर्वाधिक कैंडल्स जलाने का रिकॉर्ड: क्या आप जानते हैं कि बर्थडे केक पर सबसे अधिक कैंडल्स जलाने का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड भी है? जन्मदिन के केक पर सबसे ज्यादा मोमबत्तियां जलाने का विश्व रिकॉर्ड 2016 में आश्रिता फुरमान और न्यूयॉर्क स्थित श्री चिन्मय केंद्र ने बनाया था, जब केक पर 72,585 मोमबत्तियां जलाई गई थीं। यह केक ध्यान गुरु श्री चिन्मय के 85वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में बनाया गया था। श्री चिन्मय केंद्र के 100 सदस्यों ने मिलकर यह अनोखा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था।

बर्थडे पर केक काटने की शुरुआत: जन्मदिन के अवसर पर दुनिया के अधिकांश देशों में केक काटा जाता है, खाया-खिलाया जाता है। माना जाता है कि 16वीं-17वीं सदी में जर्मनी में पहली बार छोटे बच्चों का जन्मदिन मनाने के लिए केक बनाना शुरू किया गया। इस केक को 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। ये केक दिखने में आज के केक से काफी मिलते-जुलते होते थे। फिर धीरे-धीरे केक बर्थडे सेलिब्रेशन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता गया।

पॉपुलर केक फ्लेवर्स: जन्मदिन के केक की बात करें तो ज्यादातर लोगों के लिए चॉकलेट सबसे पसंदीदा फ्लेवर होता है, उसके बाद नंबर आता है वनीला फ्लेवर का। जर्मन चॉकलेट केक दुनिया के सबसे मशहूर केक्स में से एक है। इंटरेस्टिंग बात यह है कि 'जर्मन चॉकलेट केक' की उत्पत्ति जर्मनी में नहीं हुई थी। दरअसल, इसका संबंध सैमुअल जर्मन नामक एक अमेरिकी व्यक्ति से था, जिन्होंने 1852 में एक डार्क बेकिंग चॉकलेट बनाई थी। इसे 'जर्मन्स स्वीट चॉकलेट' के नाम से जाना जाता था। 1957 में इस रेसिपी का इस्तेमाल केक बनाने में किया गया और 'जर्मन्स चॉकलेट केक' शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। तब से इसे इसी नाम से जाना जाता है। *

केक से रिलेटेड कुछ इंटरेस्टिंग फैक्ट्स

- दुनिया का सबसे महंगा केक 'पाइरेट्स फैंटेसी' था जिसकी कीमत लगभग 35 मिलियन डॉलर थी।

- शिकागो के पैट्रिक बर्टोलेटी 'डीप डिश' ने 2012 में छह मिनट में 72 कप केक खाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।
- कप केक की रेसिपी गूगल पर सबसे ज्यादा सर्च की जाने वाली रेसिपीज में से एक है।
- दुनिया का सबसे ऊंचा केक बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के कुछ स्कूली बच्चों के नाम है। 33 मीटर (108.27 फीट) ऊंचे इस केक को हाकासिमा-निलासरी कलिनरी स्कूल के बच्चों ने क्रिसमस के अवसर पर बनाया था।
- पुराने जमाने में इंग्लैंड में मान्यता थी कि तकिए के नीचे 'फ्रूट केक' रखकर सोने से सुंदर पति मिलता है। इसे 'ड्रीमिंग केक' भी कहा जाता था।

पहला मैरिज फंक्शन केक

आजकल शादियों में भी केक काटने का ट्रेंड बढ़ने लगा है। यह परंपरा कब से शुरू हुई, यह तो पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता, मगर पहले विवाह केक का उल्लेख 1858 में मिलता है। यह ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया की सबसे बड़ी बेटी (उसका नाम भी विक्टोरिया था) के मैरिज फंक्शन के लिए बनाया गया था। प्रिंसेस विक्टोरिया का विवाह केक तीन गज चौड़ा और 300 पाउंड वजन का था, लेकिन वह सिर्फ एक मंजिला था। उनकी शादी के केक पर सफेद आइसिंग का पहली बार इस्तेमाल किया गया था। तभी से इस तरह की आइसिंग को 'रॉयल आइसिंग' के नाम से जाना जाता है।

हम जो चाहते हैं, हमेशा वैसा ही हो, यह हमारे हाथ में नहीं है। लेकिन खुश रहना हमारे हाथ में है। कुछ छोटी-छोटी बातों और आदतों को अगर हम अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो यकीन मानिए, हम हमेशा खुश रह सकते हैं। ऐसी ही कुछ काम की बातों के बारे में जानिए।

अपना लें ये आदतें हमेशा रहेंगे खुश

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

किसी ने कितनी सही बात कही है, 'अपने दुःखों को भगाने का एक ही रास्ता है, खुश रहना।' सब खुश रहना चाहते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि खुशियों को अपने दामन में समेट कर कैसे रखा जाए? डॉ. ए. शिंडलर के अनुसार, 'दुःख ही सभी मनोदैहिक रोगों का एकमात्र कारण है और खुशी ही एकमात्र उपचार है।' डिजीज शब्द का अर्थ ही दुःख की अवस्था है। डिज-ईज यानी आराम से न रहना। दरअसल, खुशी एक मानसिक स्थिति है, जो काफी हद तक हमारी आदतों पर निर्भर करती है।

क्या है हैप्पी-ओलॉजी: विशेषज्ञों का मानना है कि खुशी हासिल करने का एक वैज्ञानिक नजरिया भी होता है और हर कोई अपने दैनिक जीवन में खुश होने के लिए छोटे-छोटे कारण ढूंढ सकता है। इसे ही 'हैप्पी-ओलॉजी' कहते हैं। इसके मुताबिक किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से खुश या संतुष्ट होना आपके ऊपर निर्भर करता है। आप चाहें तो किसी बात से चिढ़कर गुस्सा या उदास हो सकते हैं और आप चाहें तो इन नकारात्मक भावनाओं से ऊपर उठकर खुद को खुश रख सकते हैं, यानी खुश रहना हमारे हाथ में है। सुविख्यात लेखक एवं विद्वान डेल कार्नेगी ने भी कहा है, 'प्रसन्नता बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती, वह हमारे मानसिक दृष्टिकोण से संचालित होती है।' विलियम जेम्स ने कहा है, 'हम इसलिए नहीं हंसते कि हम खुश हैं, बल्कि हम इसलिए खुश हैं कि हम हंसते हैं।'

खोज लीजिए अपना हैप्पियोलॉजिस्ट: व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, आप खुद अपना हैप्पियोलॉजिस्ट खोज सकते हैं। अपने इर्द-गिर्द एक ऐसे इंसान को ढूंढ निकालें, जो आपके हिसाब से सदा खुश रहता है और उसे अपना आदर्श यानी हैप्पियोलॉजिस्ट बना लें। आप देखेंगे कि ये लोग जरा-जरा सी बातों में ही बच्चों की तरह खुश हो जाते हैं और खिलखिलाकर हंसने लगते हैं। ये खुशी हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करती है। कोई चाहे तो 10 रुपए की ऑरेंज आइसक्रीम खाकर खुश और संतुष्ट हो सकता है, वहीं आदतन दुःखी रहने वाला इंसान 100-150 की ब्रांडेड आइसक्रीम खाकर भी दुःखी ही नजर आएगा और उसके स्वाद में कोई न कोई नुक्स ढूंढ निकालेगा।

छोटी-छोटी चीजों में खोज लें खुशी: वैज्ञानिकों ने अपनी स्टडीज में पाया है कि खुश होने के लिए आप बड़ी चीजों का इंतजार न करें, छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढ़ें। मिरियम लीगलर ने अपनी पुस्तक 'फाइंडिंग योर इनर हैप्पियोलॉजी' में लिखा है, 'हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत-सी सामान्य चीजें ऐसी हैं, जिनसे हम खुशी महसूस कर सकते हैं। बस इन चीजों के प्रति हमारा नजरिया ऐसा होना चाहिए।'

ठान लें कि खुश रहना है: वाल्टेयर ने कहा है, 'मैंने खुश रहना चुना, क्योंकि यह मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।' इसी संबंध में अब्राहम लिंकन की बात भी बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था, 'अधिकांश लोग लगभग उतने ही खुश होते हैं, जितना खुश रहने का वे मन बनाते हैं।'

हैप्पियोलॉजिस्ट सुजाना हैलोनेस किसी समय एक दुःखी और निराश इंसान थीं। उन्हें अपनी जिंदगी और जॉब से बेशुमार शिकायतें थीं। एक दिन अचानक उन्होंने खुद को बदल डाला। अब वे हैप्पीनेस के प्रोजेक्ट पर काम करती हैं और बेहद खुश रहती हैं।

खुशी से मिलेगी सफलता: सुजाना हैलोनेस अपनी वेबसाइट पर लिखती हैं, 'मैंने सीख लिया कि सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि खुशी से सफलता मिलती है।' खुश रहने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही हमारी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी भी बढ़ती है। लोगों के साथ रिश्ते भी इंप्रूव होते हैं। जाहिर है, खुशी सफलता का माध्यम बन जाती है। सुजाना कहती हैं, 'खुशी एक अभ्यास है, मंजिल नहीं।'

मुस्कुराइए-हंसिए हर रोज: ब्रिटेन के हिप्नोटिस्ट और व्यवहार विज्ञानी पॉल मैकेना ने अपनी किताब 'आइ कैन मेक यू हैप्पी' में लिखा है कि रोज 20 बार हंसें और 20 बार मुस्कुराएं। भले ही आपको ऐसा जबरन करना पड़े। मुस्कुराने और हंसने से आपके शरीर में सेरोटोनिन रिलीज होता है, जो एक फील गुड हॉर्मोन है। कुछ दिनों बाद आप खुश रहने के अभ्यस्त हो जाएंगे। *

जानकारी / अलका 'सोनी'

इसलिए कहते हैं मैरी क्रिसमस!

क्रिसमस का त्योहार लगभग पूरी दुनिया में मनाया जाता है। सभी देश अपने-अपने तरीके से इसे मनाते हैं। इसे मनाने का तरीका चाहे जो भी हो, एक बात जो हर जगह कॉमन होती है वह है क्रिसमस की शुभकामनाएं एक-दूसरे को देते हुए 'मैरी क्रिसमस' बोलना। अन्य मौकों पर, चाहे वो न्यू ईयर हो या फिर होली, दीवाली जैसे त्योहार। लोग एक-दूसरे को 'हैप्पी' बोलकर शुभकामनाएं देते हैं, जैसे- 'हैप्पी न्यू ईयर', 'हैप्पी दिवाली' आदि। लेकिन क्रिसमस के लिए बोलते हैं- मैरी क्रिसमस।

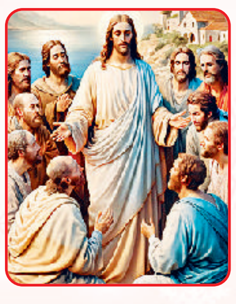

कैसे हुई 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत: क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत को लेकर कई संदर्भ मिलते हैं। सन 1534 में लंदन के बिशप जॉन फिशर ने क्रिसमस के मौके पर हेनरी अष्टम के प्रमुख मंत्री थॉमस क्रोमवेल को पत्र लिखकर 'मैरी क्रिसमस' विश किया था। इसके अलावा मैरी क्रिसमस बोलने का उल्लेख 1843 में लिखे गए चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास 'ए क्रिसमस कैरोल' में भी किया गया है।

मदर मैरी के सम्मान में: ईसा मसीह की मां 'मरियम' ईसाई धर्म में बहुत सम्मानित मानी जाती हैं। उन्हें सभी ईसाइयों की माता और मानव जाति में सर्वोच्च इंसान माना जाता है। मरियम को 'मैरी' नाम से भी जाना जाता है। इसलिए एक मान्यता यह भी है कि मदर मैरी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 'हैप्पी क्रिसमस' के स्थान पर 'मैरी क्रिसमस' बोलकर क्रिसमस विश किया जाता है।

मतलब है समान: 'मैरी' शब्द का अर्थ हर्षित, आनंदित या उल्लासपूर्ण होता है। यह शब्द अकसर उत्सव और खुशी के अवसरों के साथ जुड़ा होता है। 'हैप्पी' का अर्थ होता है 'खुश' या 'संतुष्ट'। कुछ भाषाविदों का मानना है कि 'हैप्पी' व्यक्तिगत खुशी पर जोर देता है, जबकि 'मैरी' सामूहिक और सांस्कृतिक उत्सव की खुशियों को व्यक्त करता है। क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी' शब्द इसलिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह उत्सव और उल्लास के सामूहिक अभिव्यक्ति को बेहतर ढंग से प्रकट करता है। बहरहाल, मैरी या हैप्पी दोनों ही शब्दों का प्रयोग खुशी जाहिर करने के लिए ही किया जाता है। इसलिए आप इनमें से कुछ भी बोलकर विश कर सकते हैं। *

भारत में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक गणित के प्रकांड ज्ञानी हुए हैं। राष्ट्रीय गणित दिवस (22 दिसंबर) के अवसर पर हम आपको कुछ महान भारतीय गणितज्ञों के बारे में बता रहे हैं।

गणित को समृद्ध करने वाले भारत के महान गणितज्ञ

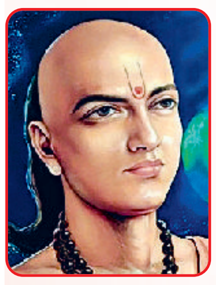

आर्यभट्ट

श्रीनिवास रामानुजन

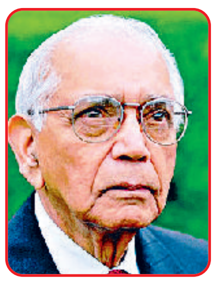

सी. आर. राव

विभूतियां / नेहा जैन

यह हम भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि भारत के विद्वानों ने दुनिया को गणित के महत्वपूर्ण, मूलभूत सिद्धांतों और नियमों की जानकारी दी। 400 ई. से 1500 ई. के बीच के काल को भारतीय गणित का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में भारतीय गणितज्ञों ने कई नए गणितीय सिद्धांत दिए। भारतीय गणितज्ञों को कालखंड के हिसाब से मुख्यतया दो भागों में बांटा जा सकता है-पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञ और आधुनिक भारत के गणितज्ञ। पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञों में शामिल कुछ प्रमुख हस्तियां हैं-

आर्यभट्ट (476-550 ईस्वी): इन्हें भारतीय गणित का पिता माना जाता है। आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' के माध्यम से गणितीय सोच में क्रांति ला दी। उन्होंने ही स्थानीय मान प्रणाली, शून्य की अवधारणा और त्रिकोणमितीय कार्यों के प्रारंभिक रूपों को प्रस्तुत किया। आर्यभट्ट ने ही 'पाई' के मूल्य की सटीक गणना की, बीजीय समीकरणों के समाधान प्रस्तावित किए और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने की व्याख्या की। यह अवधारणा अपने समय से बहुत आगे थी।

ब्रह्मगुप्त (598-668 ईस्वी): शून्य को एक संख्या के रूप में मानने और उसके लिए नियम स्थापित करने वाले ब्रह्मगुप्त पहले व्यक्ति थे। इसके अलावा, उन्हें द्विघात समीकरण का पहला स्पष्ट विवरण देने और गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षक बल के रूप में वर्णित करने के लिए जाना जाता है। 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' और 'खंडखाद्यक' उनकी दो सबसे प्रसिद्ध कृतियां हैं।

शकुंतला देवी

भास्कर प्रथम (600-680 ईस्वी): इन्होंने संख्याओं को लिखने के लिए हिंदू और अरबी दशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले किया था। 'आर्यभटीय' पर उनका विश्लेषणात्मक कार्य, 'आर्यभटीय भाष्य', खगोल विज्ञान और गणित पर सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ माना जाता है। उन्हें स्थानीय मान के अनुसार संख्याओं के निरूपण के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

भास्कर द्वितीय (1114-1185 ईस्वी): इन्होंने नक्षत्र वर्ष की लंबाई और चंद्रमा के समीकरण जैसी कई खगोलीय राशियों को परिभाषित किया था। अवकल कलन (डिफरेंशियल कैलकुलस) के सिद्धांतों की खोज, दशमलव प्रणाली का व्यवस्थित उपयोग भी इनकी देन है। इन्होंने ज्यामिति और बीजगणित से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों- 'लीलावती' और 'बीजगणिताध्याय' की रचना की।

संगमग्राम के माधव (1340-1425 ईस्वी): यूरोपीय 'कैलकुलस' से सदियों पहले इन्होंने त्रिकोणमितीय श्रंखला विस्तार और घात श्रंखला की खोज की और सूर्यकेंद्रित मॉडल (हीलियोसेंट्रिक मॉडल) जैसे महत्वपूर्ण ग्रहों की गति के मॉडल विकसित किए, जिससे खगोलीय गणनाओं में क्रांति आ गई। इस प्रतिभाशाली गणितज्ञ को साइन और कोसाइन जैसे त्रिकोणमितीय फलनों के लिए अनंत श्रेणी विस्तारों में उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है।

आधुनिक भारत के प्रमुख गणितज्ञों में शामिल हैं-

श्रीनिवास रामानुजन (1887-1920): रामानुजन की स्मृति में ही गणित दिवस मनाया जाता है। इन्होंने संख्या सिद्धांत, गणितीय विश्लेषण आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया। विभाजन फलन, सतत भिन्न और अनंत श्रेणी जैसे क्षेत्रों में उनकी उत्कृष्ट खोजों ने 20वीं सदी में गणित के विकास को बहुत प्रभावित किया। उन्हें अपने समय में आधुनिक विश्व का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता था।

पी.सी. महालनोबिस (1893-1972 ईस्वी): महालनोबिस दूरी और फ्रैक्टाइल ग्राफिकल विश्लेषण इनके कुछ प्रमुख योगदान हैं।

सी. आर. राव (1920-2023): भारतीय-अमेरिकी गणितज्ञ और सांख्यिकीविद् सी. आर. राव का सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, आनुवंशिकी और चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शकुंतला देवी (1929-2013): शकुंतला देवी को मानव-कंप्यूटर के नाम से जाना जाता था। वे कैलकुलेटर की सहायता के बिना अपनी त्वरित मानसिक गणनाओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं। त्वरित मानसिक गणना के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल है। *

सिने ट्रेंड / अशोक वाधवाणी

कई हिंदी फिल्मों में क्रिश्चियन परिवेश, पात्रों और गीतों को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया जाता रहा है। कुछ फिल्में क्रिसमस सेलिब्रेशन से भी जुड़ी रही हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मों में क्रिश्चियन कैरेक्टर्स क्रिसमस सेलिब्रेशन

क्रिसमस, ईसाई धर्मावलंबियों का प्रमुख त्योहार है, जो भारत सहित विश्व भर में 25 दिसंबर को मनाया जाता है। इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं। बीते दौर से लेकर हाल के वर्षों तक हिंदी में ऐसी कई सारी फिल्में बनती रही हैं, जिनमें क्रिसमस सेलिब्रेशन का जिक्र आया, उससे जुड़े गीत फिल्माए गए, मुख्य पात्र या फिर पूरी कहानी ईसाई समुदाय के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। कई फिल्मों में तो ऐसे ईसाई पात्र दिखाए गए जो सिनेप्रेमियों के जेहन में आज भी दर्ज हैं।

ईसाई पात्र-परिवेश की कहानी: शोमैन राज कपूर ने ईसाई लड़की 'बॉबी' की कहानी पर फिल्म बनाई, जो हिट रही। 1973 में आई फिल्म 'बॉबी' में डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। हिंदू लड़के और क्रिश्चियन लड़की की इस जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। आगे चलकर, साल 1985 में इन्हीं डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर को लेकर रमेश सिप्पी ने फिल्म 'सागर' बनाई। यह डिंपल कपाड़िया की कम-बैक फिल्म थी, जिसमें उन्होंने एक क्रिश्चियन लड़की मोना डी सिल्वा की भूमिका अदा की थी।

साल 1975 में आई फिल्म 'जूली' में एक्ट्रेस लक्ष्मी ने क्रिश्चयन लड़की जूली का लीड रोल प्ले किया था। साथ ही फिल्म के अन्य प्रमुख पात्र भी ईसाई धर्म से संबंध रखने वाले ही थे। इसी नाम से साल 2004 में एक बोल्ड फिल्म बनाई गई, जिसमें नेहा धूपिया ने गोवा में रहने वाली लड़की 'जूली' का रोल किया था। संजीव कुमार की फिल्म 'देवता' (1978) और 'चेहरे पे चेहरा' (1981) की कहानी ईसाई समाज और ईसाई पात्रों के ईर्द-गिर्द घूमती है।

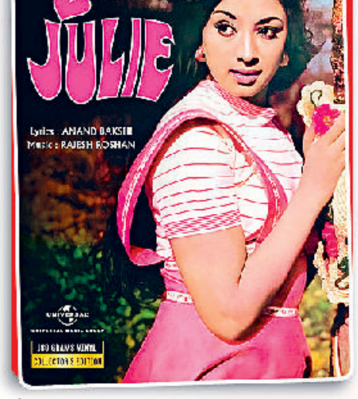

नाना पाटेकर, मनीषा कोईराला और सलमान खान की फिल्म 'खामोशी : द म्यूजिकल' (1996) भी एक क्रिश्चियन परिवार के इर्द-गिर्द बुनी गई प्रेम कहानी है। इसके अलावा शबाना आजमी, मार्क रॉबिंसन, इरफान खान अभिनीत 'बड़ा दिन' (1998), और 'मैरी क्रिसमस' (2024) फिल्मों का नाम क्रिसमस फेस्टिवल पर रखा गया है। इन फिल्मों में इस धर्म-संस्कृति से जुड़े रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि को भी बखूबी दर्शाया गया है।

यादगार पादरी के किरदार: ईसाई धर्मगुरु यानी पादरी को विशेष आदर, मान-सम्मान दिया जाता है। कई हिंदी फिल्मों में पादरी का कैरेक्टर निभाने वाले आर्टिस्ट्स को खूब सराहना मिली। 'दोस्त' (अभि भट्टाचार्य), 'अमर अकबर एंथोनी' (नाजिर हुसैन), 'तहलका' (जीतेंद्र), 'हत्या' (सत्येन कप्पू), 'खोज' (डैनी), 'देवता' (श्रीराम लागू) आदि कई फिल्में बनी हैं, जिनमें पादरियों के महत्वपूर्ण और यादगार रोल रहे।

कुछ पॉपुलर क्रिश्चियन कैरेक्टर: कई ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें ईसाई कैरेक्टर या सहायक पात्र लोगों को खूब पसंद आए। 'अनाड़ी' में ललिता पवार का अपनी फिल्मी इमेज के विपरीत सहृदय ईसाई महिला मिसेज एल डीसा का अविस्मरणीय रोल था। ऐसे ही फिल्म 'गैंबलर' में जाहिरा, 'मेरा नाम जोकर' में सिमी ग्रेवाल, 'वो मैं नहीं' में आशा सचदेव, 'मजबूर' में प्राण, 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' में नसीरुद्दीन शाह, 'जाने भी दो यारों' में सतीश शाह और 'अमर अकबर एंथोनी' में अमिताभ बच्चन द्वारा निभाया गया एंथोनी का कैरेक्टर लोग आज भी नहीं भूल पाए हैं।

'अमर अकबर एंथोनी' में एंथोनी गोंसाल्वेस के रोल में अमिताभ

गोवा में फिल्माई गई फिल्में: जब भी भारत में ईसाई परिवेश की बात होती है, गोवा का नाम सबसे पहले याद आता है। बॉलीवुड में ऐसी कई फिल्में बनीं, जिनकी अधिकतर शूटिंग गोवा में हुई। 'जोहर महमूद इन गोवा' (1965) में आई एस. जोहर और महमूद मुख्य भूमिका में थे। अमिताभ बच्चन की 'सात हिंदुस्तानी' (1969) और 'पुकार' (1983) इन तीनों फिल्मों की कहानी गोवा मुक्ति संग्राम पर आधारित थी। शाहरुख खान, सुचित्रा कृष्णमूर्ती अभिनीत 'कभी हां कभी ना' (1994) और शाहरुख खान, चंद्रचूड़ सिंह, ऐश्वर्या राय की फिल्म 'जोश' (2000) के मुख्य पात्र ईसाई ही थे। दोनों फिल्में गोवा में शूट की गईं। ऐसे ही दीपिका पादुकोण की फिल्म 'फाइंडिंग फैनी' (2014) गोवा में शूट हुई थी। इस फिल्म के सभी मुख्य पात्र ईसाई हैं। 'गो-गोवा-गॉन' (2013) गोवा में शूट की गई अलग टाइप की कॉमेडी, थ्रिलर है, जिसमें सैफ अली खान, कुणाल खेमू, पूजा गुप्ता आदि मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म के मुख्य पात्र भी क्रिश्चियन ही हैं। गोवा में शूट की गई अधिकतर फिल्मों में वहां के चर्च, बीच, ईसाई समुदाय के लोगों की जीवनशैली और संस्कृति को खूबसूरती से फिल्माया जाता रहा है। *

कई गीत भी हुए पॉपुलर

बॉलीवुड फिल्मों में ऐसे कई गाने भी बने हैं, जो पूरी तरह क्रिसमस से जुड़े हैं। इनमें से कुछ पॉपुलर भी हुए हैं। 'बचपन' फिल्म का गीत 'मदर मैरी, मां हम तेरे दुलारे हैं' प्रेयर है। 'शानदार' में संजीव कुमार सांता क्लॉज की वेशभूषा में गाते हैं, 'आता है, आता है, सांता क्लॉज आता है', 'जख्मी' में 'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल द वे।' कई गीत ऐसे भी रचे हैं, जिनको सुनते ही समझ आ जाता है कि ये गीत या इसके पात्र ईसाई धर्म से जुड़े हुए हैं। फिल्म 'जमीर' में शम्मी कपूर पर फिल्माया गया गीत 'बड़े दिनों में खुशी का दिन आया...'। 'जूली' में प्रीती सागर की आवाज में अंग्रेजी गाना है, 'माइ हार्ट इज बीटिंग', 'जीते हैं शान से' में 'जूली-जूली जॉनी का दिल तुम पर आया जूली।' गाने में मिथुन चक्रवर्ती अपना प्रेम प्रकट करते हैं। 'सागर' में 'ओ मारिया, ओ मारिया' गाने में कमल हासन, डिंपल कपाड़िया की मस्ती देखने लायक है। 'देवता' का हटकर लिखा गाना है, 'चल बैठें चर्च के पीछे'। ये सभी गाने आज भी लोकप्रिय हैं।